Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًى ۙ لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :196)

अनुवाद: वे लोग जो अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं फिर जो वे खर्च करते हैं उस का इहसान जताते हुए या तकलीफ देते हुए पीछा नहीं करते उन का बदला उन के रब के पास है और उन पर कोई ख़ौफ नहीं होगा और न वे भय करेंगे ।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 33

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

4 ज़विल हज्जा 1439 हिजरी कमरी 16 ज़हूर 1397 हिजरी शमसी 16 अगस्त 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया कि कश्ती नूह में हमारी शिक्षा का जो भाग है वह ज़रूर हर अहमदी को पढ़ना चाहिए बल्कि पूरी कश्ती नूह ही पढ़ें।

धरती और पर्वतों का कण-कण समुद्रों और सागरों की एक-एक बूंद, पेड़-पौधों का एक एक पत्ता, उसका एक एक भाग, मनुष्य और जानवरों के समस्त कण ख़ुदा को पहचानते, उसकी आज्ञा का पालन करते हैं

क्या बादल क्या वायु क्या अग्नि क्या धरती सब के सब ख़ुदा के आज्ञापालन और उसकी पवित्रता के बखान में व्यस्त हैं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ऐसा ही इन्जील में कहा गया है कि तुम अपने शुभ कर्मों को लोगों के समक्ष दिखलाने के लिए न करो। परन्तु क़ुर्आन कहता है कि तुम ऐसा मत करो कि अपने सारे कार्य लोगों से छुपाओ बल्कि तुम अवसर के अनुकूल अपने कुछ शुभ कार्य गुप्त रूप से करो, जब तुम देखो कि गुप्त रूप से कार्य करना तुम्हारे हित में है और कुछ कार्य दूसरों के समक्ष प्रदर्शन करते हुए भी करो, जब तुम देखो कि प्रदर्शन में लोगों की भलाई है ताकि तुम्हें ख़ुदा की ओर से दोगुना बदला प्राप्त हो और ताकि निर्बल लोग जो एक शुभ कार्य का साहस नहीं रखते वे भी तुम्हारा अनुसरण करते हुए वह शुभ कार्य कर लें। अत: ख़ुदा ने अपनी वाणी में जो कहा-सिर्रन व अलानियतन (अर्रअद-23) अर्थात गुप्त रूप से भी दान दो और प्रत्यक्ष रूप से भी। इन आदेशों की फ़लास्फ़ी का उसने स्वयं वर्णन कर दिया है। जिसका अर्थ यह है कि न केवल अपने कथन से लोगों को समझाओ बल्कि कर्म से भी प्रेरणा दो क्योंकि प्रत्येक स्थान पर कथन प्रभावशाली नहीं होता बल्कि अधिकांशत: आदर्श का बहुत प्रभाव पड़ता है।

इसी प्रकार इन्जील में है कि जब तू प्रार्थना करे तो अपनी कोठरी में जा। परंतु क़ुर्आन शिक्षा देता है कि अपनी प्रार्थना को हर अवसर पर गुप्त मत रखो बल्कि तुम लोगों के सम्मुख और अपने भाइयों के समूह में प्रत्यक्ष रूप में भी प्रार्थना किया करो ताकि यदि कोई प्रार्थना स्वीकार हो तो उस समूह के लिए ईमान की उन्नति का कारण हो और अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिले। इसी प्रकार इन्जील में है कि तुम इस प्रकार प्रार्थना करो कि हे हमारे बाप जो कि आकाश पर है तेरे नाम की पवित्रता स्थापित हो, तेरा राज्य आए, तेरी मर्ज़ी जैसी आकाश पर है धरती पर आए। हमारी प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे। जिस प्रकार हम अपने क़र्ज़दारों को बख़्शते हैं तू अपने ऋण को हमें बख़्श और हमें परिक्षा में न डाल, बल्कि बुराई से बचा क्योंकि राज्य, अधिकार शक्ति और शौर्य सदा तेरे ही हैं। परन्तु क़ुर्आन कहता है कि यह नहीं कि धरती उसकी पवित्रता से खाली है बल्कि धरती पर भी ख़ुदा की पवित्रता का गुणगान हो रहा है, न केवल आकाश पर जैसा कि ख़ुदा का कथन है-

وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ

''वइम्मिन शयइन इल्ला युसब्बिहो बिहम्दिही'' (बनीइस्राईल 45)

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ

''युसब्बिहो लिल्लाहे मा फ़िस्समावाते वमा फ़िलअर्ज़ (अलजुमअ: 1)

अर्थात धरती, आकाश और जो कुछ उनमें है का कण-कण ख़ुदा की पवित्रता का गुणगान करने में व्यस्त है, पर्वत उसकी स्तुति में व्यस्त हैं, समुद्र उसके स्मरण में लीन हैं, पेड़-पौधे उसकी स्तुति में व्यस्त हैं, बहुत से सत्यवादी उसकी स्तुति में व्यस्त हैं । जो मनुष्य हृदय और मुख से उसकी स्तुति में व्यस्त नहीं और ख़ुदा के समक्ष नहीं झुकता उसे ख़ुदा की नियति विभिन्न प्रकोपों और आपदाओं से नतमस्तक कर रही है। जो कुछ फ़रिश्तों के विषय में परमेश्वर की पुस्तक में लिखा है कि वे नितांत आज्ञापालक हैं। यही प्रशंसा धरती के चप्पे-चप्पे और कण-कण के संदर्भ में क़ुर्आन शरीफ़ में विद्यमान है कि प्रत्येक वस्तु उसकी आज्ञा का पालन कर रही है। उसकी आज्ञा के बिना न कोई पत्ता गिर सकता है, न कोई औषधि स्वस्थ कर सकती है, न कोई भोजन स्वास्थ्यप्रद हो सकता है। प्रत्येक वस्तु असीम शालीनता और असीम सेवाभाव से ख़ुदा की चौखट पर नतमस्तक है, उसकी आज्ञा का पालन करने में लीन है।

धरती और पर्वतों का कण-कण समुद्रों और सागरों की एक-एक बूंद, पेड़-पौधों का एक एक पत्ता, उसका एक एक भाग, मनुष्य और जानवरों के समस्त कण ख़ुदा को पहचानते, उसकी आज्ञा का पालन करते और उसकी पवित्रता और श्रेष्ठता का गुणगान करते हैं । इसीलिए ख़ुदा ने फ़रमाया-

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ

युसब्बिहो लिल्लाहे माफ़िस्समावाते वमा फ़िलअर्ज़ (अलजुमअ: 2)

अर्थात जैसे आकाश पर हर एक वस्तु उसकी पवित्रता और श्रेष्ठता का गुणगान करती है इसी प्रकार धरती पर भी प्रत्येक वस्तु उसकी पवित्रता और श्रेष्ठता का गुणगान करती है। अत: क्या धरती पर ख़ुदा की पवित्रता और श्रेष्ठता का गुणगान नहीं होता। ऐसे अपशब्द एक सच्चे परमभक्त के मुख से नहीं निकल सकते, बल्कि धरती की वस्तुओं में से कोई वस्तु तो धर्मादेशों का पालन कर रही है तो कोई ख़ुदा की नियति के आदेशों के अधीन है, कोई दोनों के आज्ञापालन में जुटी हुई है ।

क्या बादल क्या वायु क्या अग्नि क्या धरती सब के सब ख़ुदा के आज्ञापालन और उसकी पवित्रता के बखान में व्यस्त हैं। यदि कोई मनुष्य ख़ुदा के धर्मादेशों का अवज्ञाकारी है तो वह उसकी नियति से संबंधित आदेशों के अधीन है। इन दोनों प्रकार के शासनों से बाहर कोई नहीं। किसी न किसी आकाशीय शासन का जुआ प्रत्येक की गर्दन पर है। हां मनुष्य के हृदयों के सुधार और बिगाड़ के अन्तर्गत लापरवाही और ख़ुदा का स्मरण बारी बारी धरती पर विजय की

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की डेनमार्क और सवीडन का सफर, मई 2016 ई (भाग-5)

☆ कुरआन और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन पेशगोइयों को दिन की उज्ज्वलता की तरह पूरे होता देखकर हम अहमदी मुसलमान मानते हैं कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के संस्थापक हजरत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब कादियानी एकमात्र मसीह और इमाम महदी है। हमारा मानना है कि आप अलैहिस्सलाम शान्ति का पुंज थे ताकि में इस्लाम की अद्‌भुत और अद्‌भुत शिक्षाओं को फैला सकें। आपने दुनिया के सभी लोगों को इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया कि वह शान्ति तथा प्रेम के साथ एक दूसरे के साथ मिल जुल कर रहें। और आप ने अपनी जमाअत को दया तथा सहानुभूति की शिक्षा पर ज़ोर दिया।

मैं एक बार फिर सारे मेहमानों और विशेष रूप से यहां आने लाने वाले राजनेताओं और देश की हस्तियों से आग्रह करता हूं कि आप विश्व शांति की स्थापना के लिए कोई मौका हाथ से जाने न दें। अन्यथा विनाश का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। जैसा कि मैंने पहले कहा था, तीसरा विश्व युद्ध बहुत तेज़ी से आ रहा है और यदि इस को रोका न गया तो तबाह करने वाले परिणाम नस्लों तक जाएंगे। क्योंकि यह संभव है कि इस युद्ध में परमाणु हथियारों का उपयोग किया जाए। ऐसे युद्ध के प्रभाव सोच से परे हैं।

संबोधन हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

स्वागत समारोह

यह मुलाकात 6 बज कर 50 मिनट तक चली। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ होटल हॉल में पधारे। हुज़ूर अनवर के आगमन से पहले सभी मेहमान अपनी सीटों पर बैठ चुके थे।

समारोह का आरम्भ कुरआन की तिलावत के साथ शुरू हुआ। आदरणीय मुहम्मद अकरम महमूद साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला डेनमार्क ने सूर: अल्माइदा की आयत 8 से 10 की तिलावत की और आदरणीय ब्लाज बटर साहिब ने इन आयतों का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया।

इस के बाद , आदरणीया मुहम्मद जकरिया खान इन्चार्ज मुबल्लिग़ डेनमार्क ने स्वागत के लेक्चर प्रस्तुत किया, और फिर कुछ मेहमानों ने अपने लेक्चर प्रस्तुत किए।

*सब पहले माननीय Holger Schou Rasmussen साहिब जो Lolland के मेयर हैं ने अपना पता पेश करते हुए कहा,

'मैं इस कार्यक्रम में आमंत्रित किए जाने का शुक्रिया अदा करता हूं। लोलैंड नगर पालिका के मेयर होने के नाते, यह एक महान सम्मान है कि मैं डेनमार्क में हुज़ूर अनवर को स्वागत कहने का सम्मान प्राप्त कर रहा हूं। इस प्रकार की धार्मिक आवाज़ों को शांति, सहनशीलता और सद्भावना के बारे में बात करने वाली हों प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और आज कल डर और असुरक्षा के माहौल में इसका महत्व बढ़ता है। ये चुनौतियां हैं जिन का हम को सामना करते हैं, और हम सभी को इन चुनौतियों से प्रतिस्पर्धा करने की ज़िम्मेदारी है। मुझे बहुत ख़ुशी है कि डेनमार्क का सबसे पुराना मुस्लिम समुदाय इस कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। यहां आप यहूदी, ईसाई, बौद्ध और मुस्लिम समेत अन्य धर्मों के प्रतिनिधियों के साथ बैठे हैं। यह क्षेत्र पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता देता है और विभिन्न धर्मों के रहने वाले एक साथ शांति से रहते हैं और कोई पारस्परिक संघर्ष नहीं होता है। आपके ख़लीफा के लिए शांति और प्यार फैलाने की इच्छा भी एक ही चीज़ को दर्शाती है। हमें ख़ुशी है कि आपको नाकस्को में मस्जिद के लिए स्थान मिल गया हमें गर्व है कि आप हमारे समाज का हिस्सा हैं। आपके निमंत्रण के लिए धन्यवाद।

*इस के बाद एक महिला सदस्य बंद संसद माननीय Ulla Sandbaek जिनका संबंध Alternative Party है अपने सम्बोधन में कहा: निमंत्रण देने का बहुत धन्यवाद! मुझे यहां आने में ख़ुशी है और मैं बड़ा व्याकुलता से इस प्रोग्राम के महत्त्वपूर्ण सम्बोधन की प्रतीक्षा कर रही हूं। आज दुनिया अविश्वसनीय कठिनाइयों से मुकाबला कर रही है और हमें नहीं पता कि हमारी सभ्यता स्थापित रहेगी या समाप्त हो जाएगी, क्योंकि यह सभी तरफ से कठिनाइयों का सामना कर रही है। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि धार्मिक नेता शांति, एकता के बारे में बात करे और हमें बताएं कि सभी का सम्बन्ध जाति से है। हम देख रहे हैं कि आजकल पोप भी सामान्य से हटकर प्यार और एकता की बात कर रहा है और मुझे ख़ुशी है कि हुज़ूर अनवर भी इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में शांति की बात करेंगे। मुझे ख़ुशी है कि इस्लाम में एक आवाज है जो शांति, प्रेम और सद्भाव की बात करती है। अत: में आज शाम यहां ख़लीफा की आवाज़ सुनने आई हूँ ताकि मैं इस संदेश को आगे दुनिया में फैलाऊं और विश्व शांति के लिए भी अपना मामूली हिस्सा डाल सकूँ। मैं हुज़ूर अनवर की बहुत आभारी हूं कि वह यहां आए हैं।

* इस के बाद सदस्य पीपुल्स जमाअत की सदस्य Yen Missmen जिन का सम्बन्ध Danish People's Party से है उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि

आप का बहुत धन्यवाद। महिलाए तथा पुरूष, सम्माननीय हज़रत मिर्ज़ा मसूर अहमद! आज मैं अपने दृष्टिकोण से हट कर बात करूंगा। मैं यहां अहमदिया मुस्लिम जमाअत के कार्यक्रम में भाग लेने से बहुत खुश हूं। डेनमार्क सदस्य का संसद और डेनिश पीपुल्स जमाअत के सदस्य के रूप में, मुझे अहमदिया जमाअत के इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सम्मानित किया गया।

महोदय ने कहा: जब मैं एक जवान व्यक्ति था, तो यहां डेनमार्क में मुस्लिम नहीं थे और आप शायद ही किसी विदेशी को देखते थे। मैं 1971 में डेनिश एयरलाइंस में शामिल हो गया। उस समय, मिस्र एयरलाइन के जहाज़ों की कमी थी, वे हमारे विमान का उपयोग करते थे। मैं उन दिनों काहिरा में था और मिस्र में मिस्र के मुसलमानों का अनुमानित जीवन का अंदाज़ा हुआ था। मैं पिरामिड से कुछ सौ मीटर दूर एक होटल में रहा, जहां कई लोग थे। वहां से कई जहाज़ हाजियों को लेकर जाते थे। सभी मुस्लिम, विशेष रूप से ख़ुशी के साथ, सफेद कपड़े पहने हुए थे। मुझे याद है कि जब एक जहाज़ चलना शुरू होता था, तो एक व्यक्ति ने दुआ की और अन्य 178 यात्री उसके पीछे के शब्दों को दोहराते थे। मैं रोज़ाना यह दुआ सुनता था और बाद में मैंने इस दुआ में शामिल होना शुरू कर दिया। मैं फ्लाइट इंस्टीट्यूशन में इन शब्दों को दोहरा कर आश्चर्यचकित हूं, लेकिन सभी ने इस को पसंद किया। मैं ये शब्द दुहराया करता था

لبیک اللھم لبیک، لبیک لاشریک لک لبیک۔ ان الحمد والنعمۃ لک والملک لاشریک لک۔

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत अबू उसैद मालिक बिन रबिया साईदी और अबूसलमा हज़रत अब्दुल्लाहह बिन अब्दुलु-असद की जीवनी और उनकी नैतिकता का ईमान वर्धक वर्णन। अल्लाह तआला इन सहाबा के उच्च स्थान को और ऊंचाइयों तक ले जाए, और हमें भी इन नेकियों को करने की तौफीक़ प्रदान करे।

आदरणीय राजा नसीर अहमद नासिर साहिब (पूर्व नाज़िर इस्लाहो इर्शाद रब्वा) की वफात। आदरणीय मुबीन अहमद साहिब पुत्र आदरणीय महबूब अहमद साहिब(कराची) और आदरणीय मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह साहिब पुत्र आदरणीय लियाकत अली साहिब(कराची) की एक डकैती की घटना में शहादत। मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा गायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 जुलाई 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ
اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

सहाबा के उल्लेख में, मैं आज दो सहाबा का उल्लेख करूंगा। एक हैं अबू उसैद मालिक बिन रबिया सअदी। हज़रत मालिक बिन रबिया अपने उपनाम अबू उसैद से प्रसिद्ध हैं। कुछ ने आपके नाम का उल्लेख हिलाल बिन रबिया के रूप में किया है। आप ख़ज़रज की शाखा बनू साअदह से थे।

(असदुल ग़ाबह सुमेरो 5 पृष्ठ 13 अबू उसैद अस्सअदी, मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत 2003 ई)

(अल असाबा फी तमीज़िस्सहाब, जिल्द 5, पृष्ठ 535 मुद्रित दारुल कुतुब बैरूत अल्इलिमया बैरूत)

अबू उसैद मालिक बिन रबिया छोटे कद के थे। सिर और दाढ़ी के बाल सफेद हो गए थे। आपके बाल घने थे। बुढ़ापे में आप देखने से वंचित हो गए थे। 60 हिजरी में हज़रत मुआविया के समय में, 75 वर्ष की उम्र में आप की वफात हुई और जंग बदर में शामिल होने वाले अंसार सहाब में आप की मृत्यु सब से आख़िर में हुई।

(अल असाबा फी तमीज़स्सहाबा जिल्द 5 पृष्ठ 536 मुद्रक दारुल कुतूब अल्इलिमया बैरूत)

(असदुल ग़ाबह , जिल्द 5 पृष्ठ 22, मलिक बिन रबिया, मुद्रित दारुल फिक्र बैरूत)

हज़रत अबू उसैद जंग बदर उहद औऱ ख़ंदक और इस के बाद के युद्धों में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल रहे। फतेह मक्का के अवसर पर, उनके पास कबीला बनू साअदह का झण्डा था।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3, सफ़ा 286 अबू उसैद अलसादी। दार अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 1996 ई)

हज़रत सुहैल बिन साद बताते हैं कि अबू हज़रत अबू उसैद ने अपने विवाह में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी शादी में दावत दी। उस दिन आप की पत्नी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा कर रही थी और वही दुल्हन थी। बड़ी सादगी से शादी हो रही थी। शादी की दावत हुई और दुल्हन ही खाना पका रही थी। परोस भी रही थी। हज़रत सुहैल आगे सवाल कर के जवाब दे रहे हैं। यह उन का अंदाज़ है कहते हैं कि तुम जानते हो कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उन्होंने क्या पिलाया उन्होंने एक बर्तन में रात में आप के लिए खजूरें भिगो दीं। जब आप ने खाना खा लिया तो उन्होंने आप को शर्बत पिलाया।

(सही मुस्लिम किताबुल अशरबः हदीस 5233)

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में एक बार कुछ कैदी आए, तो आपने एक औरत को रोते हुए देखा। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उससे पूछा, "तुम्हें क्या चीज़ रुला रही है?" उस ने कहा कि उस ने मेरे और मेरे बेटे के मध्य में बनू अब्स में बेच कर दूरी डाल दी है आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कैदी के मालिक के बुलाया जब बुलाया तो देखा कि वह अबू अबस साअदी थे आप ने फरमाया क्या तुम ने इसके और इस के बच्चे के मध्य दूरी डाली है। तो आप ने फरमाया कि वह बच्चा चलने से अक्षम था और उसके पास इसे उठाने की शक्ति नहीं थी। इसलिए मैंने इसे बनो अबस को बेच दिया। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम ख़ुद जाकर इसे ले कर आओगे। अत: अबू सईद जाकर बच्चे को वापस लाया और बच्चा को उस का माता के सुपुर्द किया।

(शर्फुल मुस्तफा जिल्द 4 पृष्ठ 400, हदीस 1649 मुद्रित दारुल बशायर अलइस्लामिया मक्का 2003 ई)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया चाहे इसमें शक्ति है या नहीं, चाहे वह कैदी हो या दासी हो या गुलाम हो लेकिन माँ को बच्चे की वजह से कष्ट नहीं दिया जा सकता।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक बार घोड़ों और ऊंटों की दौड़ लगाई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उंटनी जिस पर हज़रत बिलाल सवार थे सब उंठों से आगे निकल गई। इसी प्रकार आपके पास एक घोड़ा था। घोड़ों की दौड़ लगवाई और आपके घोड़े पर अबू उसैद अस्सअदी सवार थे और उस ने सब को पीछे छोड़ि दया।

(इमता अल-असमा जिल्द 1 पृष्ठ 212 दारुल कुतुब अल-इल्मिया बैरूत 1999 ई)

हज़रत सुहैल का कहना है कि जब अबू उसैद रज़ि अल्लाह के घर में उन के बेटे मुनज़र बिन अबू उसैद पैदा हुए तो उन को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में लाया गया। अप ने बच्चे को अपनी जांघ पर बिठा लिया। उस समय हज़रत अबू उसैद बैठे हुए थे। इतने में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किसी काम में व्यस्त हो गए। हज़रत अबू उसैद ने इशारा किया तो लोग मनज़र को आप की जांघ से उठा कर ले गए। जब आप फारिग़ हुए तो पूछा कि बच्चा कहां है। हज़रत अबू उसैद ने निवेदन किया कि हे अल्लाह तआला के रसूल!" हमने उसे घर भेज दिया है। आपने पूछा कि उसका नाम क्या है? अबू उसैद ने बताया कि अमुक नाम है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि नहीं उस का नाम मुनिज़र है। आपने उस दिन उस का नाम मुनिज़र रखा।

(सहीह अलबुख़ारी किताबुल अदब हदीस 6191)

व्याख्या करने वालों ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इस बच्चे का नाम अलमुनज़िर रखने के कारण यह बयान किया है कि हज़रत अबू उसैद के चचेरे भाई का नाम अल मुनज़िर बिन अम्रो था जो बेयर मऊना में शहीद हुए थे इसलिए यह नाम समानता के कारण रखा गया था ताकि वह भी उन के सर्वश्रेष्ठ उत्तराधिकारी साबित हों।

(फतेहुल बारी व्याख्या सहीह अल्बुख़ारी किताब मुग़ाज़ी जिल्द 7 पृष्ठ 497 हदीस 6191 मुद्रित कदीम बाग़ कराची)

हज़रत सुलेमान बिन यसार से मरवी है कि हज़रत उसमान की शहादत से पहले हज़रत अबू उसैद अस्सादी की आंखों की रौशनी नष्ट हो गई। नज़र आना बन्द हो गया। आंखें ख़राब हो गईं। तो इस बात पर आप कहा करते थे कि अल्लाह तआला का शुक्र है जिस ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के युग में मुझे दृष्टि दी और सारी बरकतें मैंने देखीं और फिर जब अल्लाह तआला ने लोगों को परीक्षण में डालना चाहा तो मेरे देखने की शक्ति समाप्त कर दी।

(अलमुस्तदरक अला सहीहैन जिल्द 3, सफ़ा 591 किताब मअरफतुल सहाबा हदीस 6189, मुद्रित दारुल कुतुब अल्- इलमिया बैरूत 2002 ई)

मेरी नज़र खत्म हो गई कि मैं उन बुरी स्थितियों को न देख सकूँ।

हज़रत उस्मान बिन उबैदुल्लाह जो हज़रत साद बिन अबी वक़ास के स्वतंत्र किए गए गुलाम थे वह वर्णन करते हैं कि " मैंने इब्ने उम्र, हज़रत अबु हुरैरा, हज़रत अबू क़तादा और हज़रत उसैद साइदी को देखा। यह सज्जन हम पर से गुज़रते थे इस हालत में कि हम पाठशाला में होते थे तो हम इन से अबीर की खुशबू महसूस करते थे। यह खुशबू है जो केसर और कई चीज़ों को मिला कर बनाई जाती है।

(लेखक इब्ने अबी शियबा जिल्द 6 पृष्ठ 216 किताबुल अदब दारुल फिक्र बैरूत)

मरवान बिन अल-हकम हज़रत अबु उसैद साइदी को सदके पर आमिल बनाया करते थे। अर्थात इसे इकट्ठा और वितरित करने के लिए। हज़रत अबू उसैद सईदी, जब दरवाजे पर आते थे, ऊंटों को बिठाते और उन्हें सब कुछ वितरित करने के लिए देते थे। आख़री चीज़ जो उन्होंने देते वह चाबुक होता। उसे देते हुए यूं कहते यह तुम्हारी संपत्ति में से है। हज़रत अबू उसैद एक बार ज़कात का माल वितरित करने आए और सामान पूरी तरह से वितरित कर के चले गए। घर जाने के बाद जो सोए तो देखा कि एक सांप उन की गर्दन के गिर्द लिपटा हुआ है। वह घबरा कर उठे और पूछा(किसी सेविका से या पत्नी से पूछा कि) क्या संपत्ति में से कोई चीज़ बची है जो मुझे वितरित करने के लिए दी गई थी? उसने कहा नहीं। हज़रत अबू सईद ने कहा, तो फिर क्या बात है कि सांप मेरी गर्दन में लिपटा हुआ था?" शायद देखो कुछ बचा है। जब उसने देखा तो उसने कहा कि हां ऊंट को बांधने वाली एक रस्सी थी जिसके साथ एक बैग का मुहं बांध दिया गया था। तो अबू उसैद ने वह रस्सी भी उन को वापस कर दी।

(शुएबल ईमान लिल् बहीकी जिल्द 5 पृष्ठ 167 हदीस नंबर 3247, मकतबा अर्शद नाशरून रियाज़ 2003 ई)

अल्लाह तआला उन सहाबा को तक्वा के बारीक से बारीक मानकों पर रखकर अमानत के अदा करने की उच्चतम गुणवत्ता स्थापित करवाना चाहता था और इसीलिए तो सपनों में भी उनका मार्गदर्शन किया गया था।

उमारा बिन ग़िज़य्या अपने पिता का यह बयान नकल करते हैं कि कुछ जवानों ने अंसार के बारे में हज़रत अबू उसैद से अंसार से संबंधित आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वर्णन किए गए गुणों के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फरमाते सुना है कि अंसार के सभी कबीलों में सबसे अच्छे बनी नज्जार के लोगों हैं। फिर बनो अबदे अशहल, फिर बनो हारिस बिन खज़रज, फिर बनू सादह और अंसार के सभी घरों में ही भलाई है। हज़रत अबू उसैद यह कहते थे कि यदि मैं सच्चाई के सिवा किसी चीज़ को स्वीकार करने वाला होता तो बनो साद के किसी परिवार से शुरू करता है।

(अलमुस्तदरक अला सहीहैन जिल्द 3, सफ़ा 592 हदीस 6194 मुद्रित दारुल कुतुब अल्- इलमिया बैरूत 2002)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो ने एक जगह इतिहास के संदर्भ में उल्लेख किया है कि जब अरब विजय हुआ और इस्लाम फैलने लगा तो कुन्दा कबीला की एक औरत असमा या अमिमा नाम की एक महिला, और उसे जुआनिया या बिनत अलजौन भी कहा जाता था। उसका भाई लुकमान नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में अपनी क़ौम से बतौर प्रतिनिधि हाज़िर हुआ और इस मौके पर उन्होंने कहा कि यह भी इच्छा है कि अपनी बहन की शादी नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कर दे और आमने-सामने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अनुरोध भी कर दिया कि मेरी बहन जो पहले एक रिश्तेदार से ब्याही हुई थी अब विधवा है और बहुत आदरणीय और योग्य भी है आप उस से शादी कर लें। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चूँकि अरब के कबीलों का गठबंधन मंजूर था इसलिए आपने यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया और कहा कि साढ़े बारह औकया चांदी पर निकाह पढ़ा दिया जाए। उसने कहा, हे अल्लाह तआला के रसूल , हम सम्मानजनक लोग हैं। बड़े रईस है यह मेहर थोड़ा है। आपने कहा कि मैंने अपनी पत्नी या लड़की की मेहर उससे ज्यादा नहीं रखा है। जब उसने सहमति व्यक्त कर दिया और उसने कहा ठीक है तो निकाह पढ़ा गया और उसने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अनुरोध किया कि किसी व्यक्ति को भेजकर अपनी पत्नी को मंगवा लीजिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू उसैद को इस काम पर नियुक्त किया। वह वहां गए। जूनिया ने उन्हें अपने घर बुलाया तो हज़रत उसैद ने कहा कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियों पर हिजाब नाज़िल हो चुका है। इस पर उसने दूसरी हिदयतें पूछीं जो आप ने उन्हें बता दीं और ऊंट पर बिठा कर मदीना ले आए और एक मकान में जिसके चेरो तरफ खजूरों के पेड़ भी थे लाकर उतारा। उस औरत के साथ जिस की शादी हुई थी उस की दाया भी साथ रवाना हुई थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि जस प्रकार हमारे देश में एक नौकर साथ जाती है बड़े लोग अमीर लोग भेजा करते थे। उस ज़माने में। अब तो यह रिवाज नहीं पुराने ज़माने में होता था ताकि किसी प्रकार का कोई कष्ट न हो। चूंकि यह महिला जो थी जिस की आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से शादी हुई थी या जिस के भाई ने रिश्ता पेश किया था, शादी की इच्छा थी और फिर निकाह भी हो गया था यह बहुत सुन्दर मशहूर थी और यूं भी महिलाओं को दुल्हन देखने का शौक होता है मोहल्ले की, करीब की जो दूसरी औरतें होती हैं जब भी कोई नई दुल्हन आए तो उन्हें इसे देखने का शौक होता हे। मदीना की महिलाएं भी इस महिला को देखने गईं। उसकी सुन्दरता बड़ी मशहूर थी और इस महिला के बयान के अनुसार एक महिला ने उसे सिखा दिया कि रोब पहले दिन ही डाला जाता है। जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तेरे पास आएं तो तू कह देना कि मैं आप से अल्लाह तआला की पनाह माँगती हूँ। इस पर वह तेरे बहुत अधिक चाहने वाले हो जाएंगे। हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि अगर यह बात इस महिला की बनाई हुई नहीं तो कुछ आश्चर्य नहीं कि किसी मुनाफिक ने अपनी पत्नी या और किसी रिश्तेदार द्वारा यह शरारत की हो। अत: जब उसके आने की ख़बर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिली तो उसके घर की तरफ पधारे जो इसके लिए निर्धारित किया गया था। हदीसों में लिखा है कि जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के पास आए तो आप ने उस से फरमाया कि तू अपने आप को मुझे सुपुर्द कर दे। उसने जवाब दिया, "क्या रानी भी अपने आप को साधारण पुरुषों को पेश करती है?" अब उसैद कहते हैं कि उस पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस विचार से कि अजनबी होने के कारण घबरा रही है उसे सांत्वना देने के लिए उस पर अपना हाथ रखा। आप ने अभी अपना हाथ रखा ही था कि उसने यह बहुत गंदा और अनुचित वाक्य कह दिया कि मैं तुझ से अल्लाह तआला की पनाह माँगती हूँ। हज़रत मुस्लेह मौऊद कहते हैं कि चूंकि नबी सर्वशक्तिमान ईश्वर का नाम सुनकर सम्मान की रूह से भर जाता है और उसकी महिमा का मतवाला हो जाता है। उसके इस वाक्य को सुन कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुरंत कहा कि तुम ने एक बड़ी हस्ती का वास्ता दिया है और उसकी शरण मांगी है जो बड़ा शरण देने वाला है इसलिए मैं तेरा आवेदन स्वीकार करता हूँ। इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तभी बाहर पधारे और कहा, हे अबू उसैद इसे दो चादरें दे दो और उसके घर वालों के पास पहुंचा दो। इसलिए इसके बाद उसे मेहर के भाग के अलावा बतौर एहसान दो राज़की चादरें देने का आपने आदेश दिया ताकि कुरान आदेश

وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ

पूरा हो। अर्थात आपस में उपकार का व्यवहार भूल न जाया करो। इसके अनुसार, आपने अधिक दिया है। हज़रत मुस्लेह मौऊद लिखते हैं कि जो ऐसी महिलाओं से संबंधित है जिन से किसी प्रकार का शारीरिक सम्पर्क किए बिना तलाक हो और आप ने उसे विदा कर दिया और अबू उसैद ही उसे उसके घर पहुंचा आए। यह उनके कबीला के लोगों के लिए एक झटका था और उन्होंने उसे दोषी ठहराया। लेकिन वह यही जवाब देती रही कि यह मेरी बदबख़्ती है और कई बार उसने यह भी कहा कि मुझे बहलाया गया था और कहा गया था कि जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तेरे पास आए, तो तू परे हट जाना और घृणा व्यक्त करना। इस तरह, उन पर आप का रौब स्थापित हो जाएगा। पता नहीं है कि यही कारण हुआ या कोई और। बहरहाल उसने घृणा व्यक्त की और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस से अलग हो गए और उसे विदा कर दिया।

(उद्धरित तफसीर कबीर जिल्द 2 पृष्ठ 533-535 तफसीर सूर: अलबक़रा: आयत 228)

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जो पत्नियों के आरोप लगाते हैं कि सुन्दर महिलाओं के नऊज़ो बिल्लाह चाहने वाले थे। यह जो सारी घटना है उनके लिए काफी जवाब है।

हज़रत अबू उसैद कहा करते थे कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जब भी कोई चीज़ मांगी जाती तो आप कभी इनकार नहीं फरमाते।

(मजमउज़्ज़वाइद जिल्द 8 पृष्ठ 409 किताब अलामातुन्नबुव्वत हदीस 14179, दारुल कुतुब अल- इल्मिया बैरूत 2001)

दूसरे सहाबी जो वह हैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद हैं। उसका नाम अब्दुल्लाह और उपनाम अबू सलमा था। आप की माँ बर्रह पुत्री अब्दुल मुत्तलिब थीं और अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फूफेरे भाई और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत हमज़ा के दूध भाई भी थे। उन्होंने अबू लहब की दासी सौबिया का दूध पिया था। हज़रत उम्मे मोमिनीन उम सलमा पहले आप के निकाह में थीं।

(असदुल ग़ाबह जिल्द 3 पृष्ठ 295, अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद , दारुल कुतुब अल-इल्मिया बैरूत लेबनान)

इसके बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने भी सीरत ख़ातमन्निबिय्यीन में लिखा है:

"अबू सलमा बिन अब्दुल असद जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूध भाई थे और बनू मख़जूम से थे। उनकी वफात पर उनकी विधवा उम्मे सलमा के साथ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शादी हुई।"

(सीरत ख़ात्मन्निबय्यीन से हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 124)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद इस्लाम में प्राथमिकता लाने वालों में से थे इब्ने इसहाक के अनुसार, दस लोगों के बाद आप इस्लाम लाए। अर्थात शुरुआती मुसलमानों में से थे।

(अल्इस्तेयाब फी मअरफतुल असहाब जिल्द 3 पृष्ठ 71, अब्दुल्लाहह बिन अब्दुल अल असद, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बैरूत लेबनान 2002 ई)

एक रिवायत है कि हज़रत अबू उबैदह बिन हारिस हज़रत अबू सलमा बन अब्दुल असद हज़रत अरक़म बन अबू अरक़म और हज़रत उस्मान बन मज़ऊन हुज़ूर अकरम पैगंबर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें इस्लाम की दावत दी और कुरआन पढ़ कर सुनाया, जिस पर उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया और यह गवाही दी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निर्देशित और रास्ते पर हैं ।हज़रत अब्दुल्लाहह बिन अब्दुल असद अपनी पत्नी हज़रत उम्मे सलमा के साथ पहली हिजरत हब्शा में शामिल हुए। मक्का से वापस आने के बाद, मदीना हिजरत हुई।

(असदुल ग़ाब: फी मअरफतुल सहाबा जिल्द 5 पृष्ठ 153, अबू सलमा, मकतबा दारुल्फ़िकर बैरूत लेबनान 2003 ई)

सीरत ख़ातमन्निबिय्यीन में उनकी हब्शा हिजरत का उल्लेख मिलता है कि जब मुसलमानों के कष्ट अन्तमि छोर तक पहुंच गए और क़ुरैश अपनी धमकी में तरक्की करते गए तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों से कहा कि वे हब्शा की ओर हिजरत कर जाएं और कहा कि हब्शा राजा आदिल तथा इंसाफ करने वाला है उनकी हुकूमत पर किसी पर अत्याचार नहीं होता। हब्शा का देश जिसे अंग्रेज़ी में इथियोपिया या अबे सेनिया कहते हैं महाद्वीप अफ्रीका के पूर्वोत्तर में स्थित है और घटनास्थल के अनुसार दक्षिण अरब के बिल्कुल सामने है और बीच में हिंद सागर के सिवा कोई और देश आड़े नहीं। उस युग में, हब्शा में एक मज़बूत ईसाई सरकार स्थापित थी और शहर का राजा नाजाशी नामक था, लेकिन फिर भी इस नाम से शासक को बुलाया जाता है। हब्शा के साथ अरब के व्यापार के संबंध थे। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि उन दिनों में जिनकी हम चर्चा कर रहे हैं हब्शा की राजधानी अकसोम थी जो वर्तमान शहर अदवा के करीब स्थित है और अभी तक एक पवित्र शहर के रूप में आबाद चली आती है। अकसोम उन दिनों में एक बड़ा शक्तिशाली सरकार का केंद्र था और इस समय के नजाशी का व्यक्तिगत नाम असहमह था जो एक आदिल और जागरूक और मजबूत राजा था। हालांकि, जब मुसलमानों की परेशानी चरम तक पहुंच गई, तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको फरमाया कि जिन से संभव हो वे हब्शा हिजरत कर जाएं इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमाने से 5 नबवी रजब के महीने में ग्यारह पुरुष और चार महिलाए हब्शा हिजरत कर गए। उनमें से अधिक प्रसिद्ध नाम हैं उस्मान बन अफ्फान और उनकी पत्नि रुक़य्या पुत्री आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल, अब्दुर रहमान बिन औफ, जुबैर बन अलअवाम अबू हुज़ैफह बिन अतबह, उस्मान बन मज़ऊन, मसिब बन उमैर, अबू सलमा बिन अब्दुल असद और उनकी पत्नि उम्मे सलमा। यह एक अजीब बात है कि प्रारंभिक हिजरत करने वालों में बड़ी संख्या उन लोगों की थी जो कुरैश के शक्तिशाली कबीला यों से संबंधित थे और कमज़ोर लोग कम दिखते हैं जिस से दो बातों का पता चलता है। सबसे पहली, शक्तिशाली कबीला लोगों को कुरैश के विरोध से भी संरक्षित नहीं रख सका था। दूसरा, कमज़ोर लोग, जैसे दास आदि, कमज़ोरी और अवसाद की स्थिति में थे क्योंकि उनके पास हिजरत करने की शक्ति नहीं थी। जब यह हिजरत करने वाले दक्षिण की ओर यात्रा करते हुए शुऐबह पहुंचे जो उस ज़माने में अरब के एक बंदरगाह थी तो अल्लाह तआला ने ऐसा फज़ल किया कि उन्हें एक व्यापारिक जहाज़ मिला जो हब्शा की ओर रवाना होने को बिल्कुल तैयार था। तो वे सभी उसके साथ शांति सवार हो गए और जहाज़ रवाना हो गया। क़ुरैश मक्का को उनके हिजरत का ज्ञान हुआ तो सख्त नाराज हुए कि यह शिकार मुफ्त हाथ से निकल गया। (वे उन का पीछा कर रहे थे कि जाने नहीं देना।) अत: उन्होंने उन हिजरत करने वालों का पीछा किया, लेकिन जब उनके आदमी तट पर पहुंचे, तो जहाज़ रवाना हो गया था, अत: वह घर लौट आए। हब्ब में पहुंचकर, मुसलमानों को बहुत शांति मिली और मुसलमानों ने कुरैशी के क्रोध से छुटकारा पाया।

(सीरत ख़ातमन्निबय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए पृष्ठ 146. 147)

इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि जब हज़रत अबू सलमा ने (हब्शा से वापस आने के बाद) हज़रत अबू तालिब से शरण मांगी तो बनो मखज़ोम कुछ व्यक्तियों को अबू तालिब के पास ले गए और कहा, "आपने अपने भतीजे मुहम्मद को अपने आश्रय में रखा है, लेकिन आपने हमारे भाई अबू बकर को क्यों आश्रय दिया है?" अबू तालिब ने कहा कि उसने मुझसे शरण मांगी है और वह भी मेरा भतीजा है, और यदि वह अपने भतीजे की रक्षा नहीं करता है, तो मैं भानजी को भी बचा नहीं पाता हूं। ाबोलहब ने बनो मखज़ोम लोगों से कहा कि आप हमेशा हमारे बुज़ुर्ग अबूतालिब को आकर सताते हो और तरह तरह की बातें करते हो अल्लाह की कसम या तो आप इससे रुक जाएं वरना हम प्रत्येक काम में उनके साथ शरीक होंगे यहां तक कि वह अपने इरादों को पूरा करें। उन्होंने कहा (अबू बकर, उसे संबोधित करते हुए), "हे अबूबास! जो भी हम नापसंद करते हैं, हम भी इससे वापस लेते हैं। अबूलहब क्योंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ बनो मखज़ोम का दोस्त था और सपयोगी भी था इसलिए वे इस बात से बाज आ गए कि उन्हें अबू सलमा के बारे में कुछ ज़ोर दें या दुर्व्यवहार करें। अबू-तालिब को अबू लहब से समानता की बात सुनकर (जब उन्होंने समानता की बात सुनी कि वह मेरे अनुसार बात कर रहा है और दूसरे कबीले को रोक दिया है) उम्मीद बंधी कि यह भी हमारे समर्थन पर आमादा हो जाएगा। इसलिए उन्होंने कुछ शेर कहे जिनमें अबू-लहब की प्रशंसा की और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सहायता से इसे प्रोत्साहन दिलाया।

(अस्सैरुन नविवय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 269-270, किस्सा अबी सलमा फी जवारह, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बैरूत लेबनान 2001 ई)

लेकिन बहरहाल इसका प्रभाव कोई नहीं हुआ और विरोध में बढ़ता चला गया। इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा से रिवायत है कि जब मेरे पति हज़रत अबू सलमा ने मदीना जाने का इरादा किया तो अपने ऊंट को तैयार किया और मुझे और बेटे सलमा जो मेरी गोद में था उस पर सवार कराया और फिर चल पड़े। आगे जाकर बनो मखज़ोम के कुछ लोगों ने घेर लिया और कहा कि उम्मे सलमा हमारी लड़की है हम तुम्हारे साथ नहीं जाने देंगे कि आप इसे लेकर शहर ब शहर फिरते रहो। हज़रत उम्मे सलमा का कहना है कि उन्होंने मेरे पति को मुझसे दूर कर दिया है। हज़रत अबु सलमा का कबीला बनी अब्दुल असद के लोग इस बात पर बहुत ख़फा हुए और उन्होंने कहा कि यह लड़का अबू सलमा है उसे हम तुम्हारे पास नहीं छोड़ेंगे तो वह मेरे बच्चे को ले गए। (लड़की को कबीला ने रखा और बच्चे को पुरुष के कबीला वालों ने ले लिया।) और वह कहती है कि मैं पूरी तरह से अकेली था। मुझे एक साल तक इसी तरह की परेशानी में गिरफ्तार किया गया था कि मैं हर दिन अब्ता स्थान पर जाकर रोती थी। एक दिन मेरे चाचा के पुत्रों में से एक व्यक्ति ने मुझे वहाँ रोते देखा तो उसे मुझ पर रहम आया और उसने मेरी क़ौम बनू मुगीर से जाकर कहा कि तुम इस मसकीन महिला को क्यों सताते हो। उसे अपने पति और उसके बच्चे से दूर कर दिया है। उसने मुझे अपने पति के पास जाने के लिए कहा। हज़रत उम्मे सलमा कहती हैं, उसके बाद,बनी अब्दुल असद ने मेरे बेटे को वापस लौटा दिया। तब मैंने अपना ऊंट तैयार किया और अपने बच्चे को उसके साथ ले लिया। जब मैं मदीना गई, तो मेरे साथ कोई सहायक नहीं था। जब स्थान तनीम में

पहुंची तो वहां मुझे हज़रत उस्मान बिन अबू तलहा, (उस समय मुसलमान नहीं हुए थे। उन्होंने सन 6 हिजरी में इस्लाम स्वीकार किया था) मिले और मुझे कहने लगे कि हे उम्मे सलमा किधर जा रही हो? मैंने कहा कि मैं अपने पति के पास मदीना जा रहा हूं। उसमान ने पाया कि मेरे साथ कोई है? मैंने कहा ख़ुदा की कसम कोई भी नहीं। केवल मेरा बेटा और ख़ुदा मेरे साथ हैं। उस्मान ने कहा कि अल्लाह तआला की कस्म! मैं तुम्हें अकेले जाने नहीं दूँगा। मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ तब उन्होंने मेरे ऊंट की रस्सी को पकड़ा। हज़रत उम्मे सलमा का कहना है कि अल्लाह तआला की कमस! मैंने अरबों के बीच ऐसा सम्माननीय व्यक्ति कभी नहीं देखा है। मंजिल तक पहुंचने पर वह, ऊंट से अलग हो जाते। (विभिन्न स्थानों पर पड़ाव डालते हुए जाते थे। जब एक मंजिल पर पहुंचते तो ऊंट को बिठाते और अलग हो जाते हैं।) मैं जिस समय ऊंट से उतरती तो वह ऊंट पर से उसका कजावह उतार कर उसे पेड़ से बांध देते और अलग पेड़ की छाया मैं जाकर सो जाते। जब चलने का समय होता तो वह ऊंट तैयार कर देते और फिर उस पर सवार हो जाती और वह नकेल पकड़ कर चल पड़ते यहाँ तक कि हम इसी तरह मदीना पहुँच गए। हज़रत उस्मान बिन अबू तलहा ने जब कबा में बनो अम्र बिन औफ के गांवों को देखा तो मुझ से कहा कि हे उम्मे सलमा! तुम्हारा पति अबू सलमा यहां रह रहा है। तुम ख़ुदा का नाम लेकर इस जगह प्रवेश कर जाओ और फिर उस्मान वापस मक्का चले गए।

(अस्सैरतुन्नबिवय्या ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 333 ज़िक्र अलमुहाजेरीन इला मदीना, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बैरूत लेबनान 2001 ई)

हिजरत के दूसरे वर्ष जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग उशैयरह के लिए निकले तो अबू सलमा को मदीना में अमीर निर्धारत किया।

(अल्इस्तेयाब फी मअरफतुल सहाबा, जिल्द 3 पृष्ठ 71, अब्दुल्लाहह बिन अब्दुल अल असद, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बैरूत लेबनान 2002 ई)

जंग उशैयरह के बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब लिखते हैं कि

"जमादी उला में फिर क़ुरैश मक्का की तरफ से कोई खबर पाकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहाजरीन की एक जमाअत के साथ मदीना से निकले और अपने पीछे अपने दूध भाई अबू सलमा बिन अब्दुल असद को अमीर निर्धारित किया। इस जंग में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कई चक्कर काटते हुए अंतत: समुद्र तट के पास यनबुअ के स्थान उशैयरह तक पहुंचे। और यद्यपि कुरैश से मुकाबला नहीं हुआ लेकिन इस में आप ने कबीला बनू मुदिलज के साथ उन्हीं शर्तों पर जो बनो ज़मरह के साथ करार पाई थीं एक समझौते किया और फिर वापस पधारे। "

(सीरत ख़ात्मुन्निबय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिबा एम ए पृष्ठ 329)

बनू ज़मरह के साथ ये शर्तें तय पाई थीं कि बनो ज़मरह मुसलमानों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों रखेंगे और मुसलमानों के ख़िलाफ एक दुश्मन की मदद नहीं करेंगे और जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन्हें मुसलमानों की मदद के लिए बुलाएंगे, तो वे जल्द ही आ जाएंगे। दूसरी ओर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों से यह वादा किया कि मुसलमान कबीला बनो ज़मरह के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों रखेंगे और ज़रूरत के समय उनकी मदद करेंगे। यह समझौता नियमित रूप से लिखा गया था और दोनों पक्षों के इस पर हस्ताक्षर हुए।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 1 पृष्ठ 133 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अलअरबी बैरूत 1996 ई)

फिर ख़ात्मुन्निबय्यीन में लिखा है कि जंगे अहद में जो हार मुसलमानों को पहुंची इस ने अरब के कबीलों को मुसलमानों के ख़िलाफ सिर उठाने पर पहले से अधिक दिलेर कर दिया। इसलिए अभी जंगे उहद को अधिक समय नहीं बीता था और सहाबा अभी अपनी उक्त चोटों का उपचार भी पूरी तरह नहीं कर पाए थे कि मुहर्रम 4 हिजरी में अचानक आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मदीना में यह सूचना पहुंची कि कबीला असद का रईस तुलेहा बिन ख़ुलैद और उस का भाई सलमा बिन ख़ुलैद अपने क्षेत्र के लोगों को आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ युद्ध करने के लिए तैयार कर रहे हैं। इस खबर के मिलते ही आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो अपने देश के हालात के अधीन इस प्रकार की ख़बरों के खतरों को खूब समझते थे तुरंत डेढ़ सौ सहाबियों का एक तेज़ दस्ता तैयार करके उस पर अबू सलमा बिन अब्दुल असद को अमीर निर्धारत किया और उन्हें ताकीद की कि आक्रमण करते हुए पहुंचें और उस से पहले कि बनू असद अपनी दुश्मनी को अमली जामा पहना सकें उन्हें तितर-बितर कर दें। इसलिए अबू सलमा तेज़ी से लेकिन चुपचाप बढ़ते हुए मध्य अरब के स्थान कतन में बनू असद तक पहुंच गए और उन्हें जा लिया। लेकिन कोई लड़ाई नहीं हुई बल्कि बनू असद के लोग मुसलमानों को देखते ही इधर उधर बिखर गए। और अबू सलमा कुछ दिनों की अनुपस्थिति के बाद मदीना लौट आए। इस यात्रा की असाधारण कठिनाई से अबू सलमा का वह घाव जो उन्हें उहद में आया था और अब ज़ाहिर में ठीक हो चुका था फिर ख़राब हो गया और बावजूद चिकित्सा उपचार के बिगड़ता ही गया और अंत में इसी बीमारी में श्रद्धावान और पुराने सहाबी ने जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूध भाई भी थे मृत्यु पाई।

(सीरत ख़ात्मुन्निबय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए पृष्ठ 511)

उन्हें अलयसरत कुओं के पानी से नहलाया गया जो आलिया स्थान पर बनू उमय्या बिन ज़ैद के स्वामित्व में था। इस कुएं का नाम जाहिलियत में अलअबीर था जिसे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदल कर अलयसरत रखा था। और हज़रत अबू सलमा को मदीना में दफनाया गया था।

(अत्तबकातुल कुब्रा जिल्द 3 पृष्ठ 128 अबू सलमा बिन अब्दुल असद दारुल अहयाय अत्तुरास बैरूत लेबनान 1996 ई)

हज़रत अबू सलमा की जब वफात हुई तो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप की खुली आंखों को बंद किया और उनकी मृत्यु के बाद यह दुआ की कि ऐ अल्लाह तआला! अबू सलमा के साथ क्षमा का व्यवहार कर और इस को हिदायत प्राप्त लोगों में से कर और इसके पीछे रह जाने वालों के लिए ख़ुद इन का कायम मुकाम बन। हे सारी दुनिया के ख़ुदा इसे और हमें भी क्षमा कर। एक रिवायत यह है कि जब हज़रत अबू सलमा की मृत्यु का समय निकट आया तो उन्होंने यह दुआ की कि हे ख़ुदा मेरे घर वालों पर मेरा उत्तराधिकारी अच्छे व्यक्ति को बना। इसलिए यह दुआ स्वीकार हुई और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा से निकाह कर लिया।

(असदुल ग़ाब: फी मअरफतुल सहाबा भाग 3 पृष्ठ 296, अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद, दारुल कुतुब अल-इल्मिया बैरूत लेबनान)

हज़रत उम्मे सलमा के बेटे वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू सलमा हज़रत उम्मे सलमा के यहाँ तशरीफ़ लाए और कहने लगे मैंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हदीस सुनी यह किसी और चीज़ की तुलना में मेरे लिए अधिक प्रिय है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि जिस व्यक्ति को जो भी परेशानी पहुंचे उस पर वह इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन कहकर यह कहे कि ऐ अल्लाह तआला! मैं अपनी इस मुसीबत का आप के यहां एक इनाम मांगता हूं। हे अल्लाह! मुझे इस का बदला प्रदान कर। हज़रत उम्मे सलमा बयान करती हैं कि जब अबू सलमा शहीद हुए तो मैंने यह दुआ मांगी जबकि मेरा दिल पसंद नहीं कर रहा था कि मैं दुआ मांगो कि हे अल्लाह! मुझे इन अर्थात अबू सलमा का बेहतर प्रदान कर। फिर मैं ने कहा अबू सलमा से बेहतर कौन हो सकता है क्या वह इस प्रकार न थे। क्या वह इस प्रकार न थे। अर्थात उन में इस इस प्रकार की ख़ुबियां न थीं। फिर भी मैं यह दुआ पढ़ती रही। जब हज़रत उम्मे सलमा की इद्दत पूरी हुई तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से निकाह का संदेश आया और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके साथ शादी कर ली।

(अलअसाबह फी तमीज़िस्सहाबा जिल्द 4 पृष्ठ 132 मकतबा दारुल कुतुब अल-इल्मिया बैरूत लेबनान 2005 ई)

शादी का ज़िक्र करते हुए हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने सीरत ख़ातमन्निबिय्यीन में लिखा कि इसी साल (4 हिजरी) शव्वाल महीने में पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मे सलमा से शादी फरमाई उम्मे सलमा कुरैश के एक प्रतिष्ठित परिवार से संबंध रखती थीं और इससे पहले अबू सलमा बिन अब्दुल असद के निकाह में थीं जो एक निहायत ईमानदार और पुराने सहाबी थे और उसी साल फौत हुए थे। जब उम्मे सलमा की इद्दत (यानी वह अवधि जो इस्लामी शरीयत से एक विधवा या तलाक शुदा महिला को गुज़ारनी होती है और इससे पहले वह शादी नहीं कर सकती वह) गुज़र गई तो उस के बाद उम्मे सलमा जो एक बहुत समझदार और सलीका वाली और सक्षम महिला थीं तो अबू बकर ने उनसे शादी करने की इच्छा की। लेकिन उम्मे सलमा ने मना कर दिया। अंत में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुद अपने लिए उन का विचार आया जिस का एक कारण यह भी था कि उम्मे सलमा की व्यक्तिगत गुणों के अलावा जिनकी वजह से वह एक कानून बनानेवाला नबी की पत्नी बनने में सक्षम थीं वह एक बहुत बड़े

स्तर के प्राचीन सहाबी की विधवा थी और फिर उन के एक बच्चा भी था जिसकी कुछ विशेष व्यवस्थाएं थीं। इसके अलावा चूंकि अबू सलमा बिन अब्दुल असद आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूध भाई भी थे इसलिए आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके पीछे रह जाने वालों का विशेष विचार था। बहरहाल आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मे सलमा को अपनी तरफ से शादी का संदेश भेजा। पहले तो अम्मे सलमा ने अपनी कुछ कमज़ोरी के कारण कुछ देरी की और यह बहाना भी पेश किया कि मेरी उम्र अब बहुत अधिक हो गई है और मैं बच्चों के पैदा करने में असमर्थ हूं। लेकिन चूँकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उद्देश्य कुछ अन्य था इसलिए अंतत: वह रज़ामंद हो गई और उनके द्वारा उनके लड़के ने माँ का अभिभावक होकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ उनकी शादी कर दी। जैसा वर्णन किया जा चुका है उम्मे सलमा एक विशेष स्तर की महिला थीं और बहुत ज्ञान वाली और नेक होने के अलावा ईमानदारी और विश्वास में भी एक उच्च स्तर रखती थीं और उन में से थीं जिन्होंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश से शुरुआत में हब्शा हिजरत की था मदीना की हिजरत में भी वह सब औरतों से प्रथम नम्बर पर थीं। हज़रत उम्मे सलमा पढ़ना भी जानती थीं और मुसलमान औरतों की शिक्षा और प्रशिक्षण में भी उन्होंने विशेष भाग लिया। इसलिए हदीस की पुस्तकों में भी कई रिवायतें और हदीसें उनसे मरवी हैं और इस दिशा से उनका स्तर नबी की बीवियों में दूसरे नंबर पर और कुल सहाबा (मर्द तथा औरतों) में बारहवें नंबर पर है। ''

(उद्धिरत सीरत ख़ात्मुन्निबय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम ए पृष्ठ 530 - 531)

यह सहाबा का उल्लेख था। अल्लाह तआला इन सहाबा के उच्च स्थान को अधिक ऊंचाइयों पर ले जाता चला जाए और हमें भी नेकियों को करने की तौफ़ीक़ दे जो ये लोग करते रहे।

अब मैं कुछ वफात प्राप्त लोगों की घोषणा करूंगा और नमाज़ के बाद उनका नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा।

इनमें से पहले राजा नसीर अहमद साहिब नासिर हैं जो वाक्फे ज़िन्दगी थे और मुरब्बी सिलिसला थे और पूर्व नाज़िर इस्लाहो इर्शाद केन्द्रीय भी रहे। 6 जूलाई सुबह 11 बजे 80 साल की उम्र में उनकी ताहिर हार्ट इंस्टीट्यूट में मृत्यु हुई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। कई सालों से आप बीमार थे। 2012 ई से, उनकी तबीयत धीरे-धीरे खराब हो रही थी। पिछले तीन महीनों से, ब्रैन हैम्बर्ग पूरी तरह से बिस्तर पर थे। 7 मई 1938 ई को भैरह ज़िला सरगोधा में पैदा हुए थे। वहीं उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा ली। मैट्रिक क्या इसके बाद लाहौर जाकर विभाग सिंचाई (Irrigation) में बतौर क्लर्क नौकरी शुरू कर दी। 1958 ई में उन्होंने जीवन वक्फ किया और जामिया में प्रवेश किया और 1965 ई में शाहिद की डिग्री प्राप्त की। उनके परिवार में अहमदियत उनके पिता राजा ग़ुलाम हैदर साहिब द्वारा आई थी जिन्होंने हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी के हाथ पर बैअत की थी और बाद में फिर आप के माता-पिता और भाई बहन की भी बैअत करवाई। राजा नसीर अहमद के पिता की इच्छा यह थी कि उनका बेटा एक वक्फ करे। इसलिए इस इच्छा को पूरा करने के लिए राजा साहिब ने 1958 ई में वक्फे ज़िन्दगी का फार्म भरा और अपने बड़े भाई राजा नज़ीर अहमद साहिब ज़फर (स्वर्गीय) के पास ले गए कि उस पर हस्ताक्षर कर दें। उनके भाई ने उन्हें यह सोचने के लिए कहा कि यह वक्फ ज़िन्दगी बहुत कठिन है और बहुत मेहनत का काम है और यह एक बड़ी ज़िम्मेदारी है। लेकिन आपने अपने भाई से कहा कि मैंने बहुत सोचा है कि आपको साइन करना चाहिए। पिताजी की मृत्यु हो गई थी। इस के बाद बहरहाल आप ने वक्फ भर दिया। जैसा कि मैंने कहा कि जामिया में प्रवेश किया और फिर वहां से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। जामिया पूरा करने के बाद, 47 साल सेवा की तौफीक पई। पाकिस्तान में विभिन्न स्थानों पर मुरब्बी के रूप में सेवा की और जब बांग्लादेश और पाकिस्तान एक होते थे तो पूर्वी पाकिस्तान या बांग्लादेश में भी और पूर्वी पाकिस्तान में भी उन्हें बतौर मुरब्बी सेवा की तौफ़ीक़ मिली। एक मुबल्लिग़ के रूप में युगांडा में। ज़ायरे में रहे। इंडोनेशिया में रहे। दो साल जामिया अहमदिया में एक शिक्षक के रूप में सेवा की। फिर सदर अंजुमन अहमदिया में नायब नाज़िर भी रहे। इस के बाद दस वर्षों तक नाज़िर इस्लाहो इर्शाद और दो साल एडीशनल रिश्ता नाता फिर दो साल एडीशनल प्रकाशन के रूप में सेवा की तौफीक़ पाई। फिर 2012 ई में फिर यह रिटायर्ड हुए। उनकी पत्नी उनके चाचा की बेटी थीं जो उन के जीवन में वफात पा गईं थीं। और उनके तीन बेटे हैं। राजा मुहम्मद अहमद यहां लंदन में रहते हैं। राजा अतुल मन्ना मुरब्बी सिलिसला वकालत तसनीफ रब्वा में हैं। और राजा मुहम्मद अकबर भी यहां इंग्लैंड में रहते हैं। बहुत अल्लाह तआला पर भरोसा करने वाले और दुआ करने वाले इंसान थे। उनके बेटे लिखते हैं कि आप बांग्लादेश में थे, एक बार आग लग गई और अहमिदयों के घरों के पास आग पहुंची। इस पर, आपने दुआ की कि हे अल्लाह तेरे मसीह मौऊद ने तो बताया है कि आग हमारी ग़ुलाम बल्कि ग़ुलामों की ग़ुलाम है तू हमें इस आग से बचा ले। कहते हैं कि आग इस घर तक आई और एक कोने को छू कर वापस वहीं रुक गई और आगे नहीं बढ़ी और अहमदियों के घर जो थे नुकसान से बच गए।

जब यह युगांडा में थे तो गृह युद्ध के कारण वहां स्थिति ख़राब हो गई। लेकिन फिर भी आप प्रचार के लिए जाते थे। सुबह प्रचार करने के लिए चले गए और शाम को आए। रहने के लिए कोई जगह नहीं थी, इसलिए आस-पास के इलाकों में जा सकते थे। एक घटना है कि एक बार जमात इस्लामी के एक आदमी आपको किसी तब्लीग़ी जमाअत का मौलवी समझ कर आया। उन्होंने कहा कि मेरे पास एक कार है, आप वह ख़रीद लें और उन्होंने इस कार के लिए 1400 डालर कहा। अंत में, यह सौदा 1150 अमेरिकी डॉलर में तय किया गया था। जमाअत की वित्तीय स्थिति यह भी नहीं थी कि कार खरीद सकती है। न राजा साहिब की परिस्थितियां इस प्रकार की थीं कि कार खरीद सकते। लेकिन आप ने कहा कि ठीक है। अत: वह सौदा हो गया। अल्लाह तआला से दुआ की कि हे अल्लाह पैसों का प्रबन्ध कर दे ताकि मैं एक कार खरीद सकूं। और इस लिए दुआ की कि अपना चूल्हा और बिस्तर लेकर तब्लूग़ के लिए निकल सकूं। तब्लीग़ में बहुत आसानी रहेगी। वह बहुत परेशान थे। सौदा भी हो गया था कुछ दिन की छूट थी पैसे देने की। तो कहते हैं कि एक दिन मैंने पोस्ट बॉक्स खोला, उसमें से एक ख़त निकला जो उन के रिश्तेदार भाई का था। कनाडा से आया था। उस में लिखा हुआ था कि मैंने रात को सपना देखा कि आपको 1150 डालर की आवश्यकता है। मुझे नहीं पता कि आपको इसकी आवश्यकता क्यों है। लेकिन बहरहाल वह पैसे आप को भिजवा रहा हूं और सात ही 1150 डालर का चेक भी था। इस तरह और भी उन के दुआ की स्वीकृति की घटनाएं हैं

कुरआन करीम की तिलावत की उन को बहुत शौक था। यही लिखते हैं कि पिता जी को शौक था कि हवा में और पानी में भी कुरआन समाप्त करें। धरती में तो कई बार समाप्त कर चुके हैं। और समुन्द्र के सफर में भी इन को कुरआन समाप्त करने की तौफीक मिला। परन्तु हवाई जहाज़ का सफर इतना लम्बा नहीं था। जो जितना भी जिस सीमा तक सफर के दौरान पढ़ सकते थे। वह पढ़ा करते थे। इन के वाक्फ ज़िन्दगी बेटे राजा अताउल मन्नान जो हैं मुरब्बी है आजकल वकालत तसनीफ में काम कर रहे हैं। कहते हैं कि अब्बा जान ने हमेशा जो नसीहतें की थीं। एक यह कि कभी शिर्क न करना दूसरा यह कि प्रत्येक अवस्था में अहमदिया ख़िलाफत के साथ जुड़े रहना। माता के मान सम्मान की यह अवस्था थी की इन की बहन लिखती हैं कि मेरी माता की इतनी आज्ञा पालन करते थे कि अगर कोई बात वह बार बार कहतीं तो हर बार उन की बात को इस प्रकार सुनते जिस तरह वह पहली बार सुन रहे होते। कभी नहीं कहा कि आपने मुझे पहले बताया है। उनकी बहू जो मुरब्बी सिलिसला की पत्नी हैं वह लिखती हैं कि अठारह वर्षों में इस घर से और खासकर अब्बा जी और अम्मी यानी ससुर और सास से सम्मान, प्यार, मान के और कुछ नहीं मिला और राजा साहिब मेरी स्वर्गीय मां से कहते थे कि मैं आपकी बेटी को मेका भुला दूंगा। तो उन्होंने कहा कि नहीं बच्चियां मेका किस प्रकार भूल सकती हैं। उन्होंने कहा नहीं। जब मैं उन्हें एक बेटी की तरह रके तो मेका भूल जाता है। बहरहाल उन्होंने अपनी बहुओं से बहुत प्यार और मुहब्बत का सुलूक किया।

यही लिखती हैं कि अब्बा जी को मैं आशिके ख़ुदाष आशिके रसूल, आशिके

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आशिके ख़ुलफाए कराम और आशिके कुरआन और ख़िलाफत से बहुत अधिक मुहब्बत करने वाला मामला का मसझने वाला और बहुत अधिक दयालु पाया। कहती हैं कि इन की यह खूबी थी कि हर महीने कुरआन करीम का पूरा दौर मुकम्मल किया करते थे। इन के रिश्तेदारों ने भी लिखा है कि हम ने देखा है और यह ग़ैर मामूली था कि अल्लाह तआला किस प्रकार उन की ज़रूरतों को पूरा करता था। और उन की दुआओं को सुनता था। बहरहाल एक कामयाब मुरब्बी और मुबल्लिग़ थे। इंतज़ामी योग्यता रखते थे। ख़िलाफत से इन का जो सम्बन्ध था एक मिसाली था और उन के बारे में कहा जा सकता है कि इस प्रकार का सम्बन्ध था कि जिस तरह नब्ज़ चलती है इस तरह यह ख़िलाफत के साथ जिस्म के साथ, दिल के साथ चला करते थे। इसी तरह इन का ख़िलाफत के साथ सम्बन्ध था और पाकिस्तान में हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने मुझे नाज़िर आला बनाया है तो एस इताअत का स्पष्ट पक्ष मैं ने इन में देखा है केवल इस लिए कि ख़लीफुत मसीह ने बनाया है उस का प्रतिनिधि है इस लिए इताअत भी करनी है। बहरहाल अक मिसाली इताअत करने वाले थे। जो कम कम ही दुनिया में नज़र आती है। अल्लाह तआला उन पर रहम करे और उन की औलाद को भी इन नेकियों और गुणों को जारी रखने की तौफीक़ प्रदान करे। बहुत सारी खूबियों के मालिक थे। ग़रीबों का ध्यान रखने वाले थे। जिन मुरिब्बयों के साथ काम किया इन का ध्यान रखने वाले थे। इन की ज़रूरतों की तरफ ध्यान रखने वाले और पूरा करने की कोशिश करने वाले थे। बहुत सारे मुरब्बियों ने मुझे लिखा है।

इसके अलावा दो शहीदों का जनाज़ा होगा जो जमाअत की वजह से तो शहीद नहीं लेकिन बहरहाल उनकी दुकान पर डाका पड़ा और उन्हें वहाँ डाकुओं ने गोलियाँ मार कर शहीद कर दिया। इन में एक मुबीन अहमद साहिब शहीद इब्न महबूब अहमद साहिब हैं और दूसरे मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह साहिब पुत्र लियाकत अली साहिब हैं। 7 जुलाई 2018 ई को लगभग दोपहर तीन बजे कराची के क्षेत्र वीटा चौक चौरंगी औद्योगिक क्षेत्र में लुटेरों ने फायरिंग कर के तीन अहमदी ख़ुद्दाम मुबीन अहमद साहिब पुत्र महबूब अहमद साहिब और ज़फ़रुल्लाह साहिब और मुहम्मद नस्रुल्लाह साहिब को घायल कर दिया था जिस से मुबीन अहमद साहिब और ज़फरुल्लाह की शहादत हो गई। इन्ना लिल्लाह वइन्ना इलैहि राजेऊन। उन की दुकान पर आए थे। इलेक्ट्रॉनिक स्टोर था और चोरी के साथ फायिरंग कर गए। क्योंकि उन्होंने आगे से विरोध किया तो उन्होंने फायिरंग कर दी और उन को शही कर दिया।

आदरणीय मुबीन अहमद साहिब पुत्र आदरणीय महबूब अहमद साहिब के परिवार में अहमदियत का आरम्भ उनके पड़दादा आदरणीय चौधरी अल्लाह तआला दाद साहिब द्वारा हुआ जिन्होंने 1940 में अपने बड़े भाई अब्दुल अज़ीज़ पटवारी साहिब द्वारा बैअत की। बैअत के बाद, उनके बेटों ने उनका विरोध करना शुरू कर दिया और घर में उनके लिए एक अलग जगह तय की और आप के बिस्तर और बर्तनों को अलग कर दिया। लेकिन उन्होंने महान धैर्य के साथ स्थितियों से मुकाबला किया। शहीद स्वर्गीय के दादा आदरणीय अली मुहम्मद साहिब जमाअत के सख्त विरोधी थे और अहमदियत के विरोधी अताउल्लाह शाह बुखारी के मुरीद थे जो घोर विरोधी था और जब अताउल्लाह शाह बुख़ारी ने विभाजन के समय कायदे आज़म के बारे में अपशब्द कहे, काफिरे आज़म कहा और उसी तरह मुस्लिम लीग के विरुद्ध बोले। तब उनके दादा जी उनसे अलग हो गए और फिर उपमहाद्वीप को विभाजित कर दिया गया। पाकिस्तान, भारत बना है और जमाअत हिजरत करके लाहौर आई तो उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हिजरत के बारे पेशगोइयों को पूरा होते देखा तो उन्हें फिर जमाअत की ओर प्रवृत्ति पैदा हुई और पाकिस्तान की स्थापना के बाद इस परिवार फिर नवाब शाह शिफ्ट किया हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो की सिंध यात्रा के दौरान शहीद स्वर्गीय के दादा ने रेलवे स्टेशन पर हज़रत ख़लीफुतल मसीह सानी का जब दर्शन किया और पवित्र चेहरा देखा तो कहने लगे यह किसी झूठे का चेहरा नहीं हो सकता और बैअत कर के जमाअत में प्रवेश किया।

मुबीन अहमद बीए के छात्र थे। शहादत के समय आयु बीस वर्ष थी। मुबीन अहमद उच्च नैतिकता के मालिक थे। नेक प्रकृति, गंभीर प्रकृति, युवा तथा सुन्दर थे। मुबीन अहमद पांचों वक्त की नमाज़ों के पाबन्द थे। घर में सब से प्यार से व्यवहार करते। शहीद एक सक्रिय कार्यकर्ता थे जो जमाअत के कार्यों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे। अगर जमाअत के कामों के लिए अपना ज़रूरी काम छोड़ना पड़ा, तो परवाह न करें। शहीद मरहूम ने वसीयत की हुई थी और फ़ाइल का नम्बर आ चुका था। उम्मीद है कि इन्शा अल्लाह अब उनकी वसीयत भी स्वीकार हो जाऐगी। मुहल्ला वालों के साथ भी बहुत अच्छे दोस्ताना संबंध थे। और हर आने वाले छोटे ने उनकी प्रशंसा की है। मुबीन अहमद की इसी घटना में शहीद होने वाले दूसरे मुहम्मद ज़फरुल्लाह साहिब के फूफी के बेटे थे। उनके पीछे रहन वालों में पिता आदरणीय महबूब अहमद साहिब माँ अमतुल हफीज़ बेगम साहिबा के अतिरिक्त बहनें मुबीना महबूब उम्र 23 साल, कनज़ह महबूब उम्र 16 साल और भाई अमीन अहमद उम्र 13 साल हैं जो शोक संतप्त छोड़े हैं।

दूसरा शहीद जिनका जनाज़ा होगा मुहम्मद ज़फरुल्लाह साहिब इब्न लियाकत अली साहिब हैं। घटना के दौरान उन्हें तीन गोलियां लगीं थीं, जिसके कारण उनके दो गुर्दे गंभीर रूप से घायल हो गए। उन का आपरेशन किया गया। ऑपरेशन तय किया गया था लेकिन फिर तबीयत ख़राब हो गई। तब डॉक्टरों ने फिर से ऑपरेशन के लिए फैसला किया लेकिन एक रात पहले वफात पा गया।इन्ना लिल्लाह वइन्ना इलैहि राजेऊन। उनके परिवार में भी अहमदियत का आरम्भ उनके पड़दादा गुलाम दीन साहिब के माध्यम से हुआ जो ज़िला गुरदासपुर के रहने वाले थे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत अब्दुल अज़ीज़ पटवारी के खेतों पर काम करते थे। आप उनके साथ एक दिन कदियान गए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुलाकात की और बैअत कर ली।

मुहम्मद ज़फरुल्लाह शहीद का जन्म अक्टूबर 1 993 ई में हुआ था।यह कराची में पैदा हुए थे। बड़ा हंस मुख ख़ुद्दाम थे। हर समय उसके होंठों पर मुस्कुराहट होती थी। मरहूम जमाअत के कामों में बढ़ चढ़ कर भाग लिया करते थे। ख़ुद्दामुल अहमदिया के विभिन्न काम किया करते थे और अल्लाह के फज़ल से मरहूम मूसी थे। शहादत के समय उन की आयु 25 वर्ष की थी। उनके पीछे रहने वालों में पिता लियाकत अली साहिब हैं। नासीरा बेगम साहिबा माता। पांच भाई हैं। वजाहत अहमद 33 वर्ष का है। मंसूर अहमद 31 वर्ष, मुसतनसर अहमद 28 वर्ष, शुजा अहमद 27 वर्ष, हाफिज़ मुहम्मद नसरुल्लाह 24 साल।

इस घटना में झ़ख्मी होने वाले तीसरे हाफिज़ नसरुल्लाह साहिब थे। वे भी उनके भाई हैं। उन का आपरेशन हो चुका है। अस्पताल में इलाज है। अल्लाह तआला उन्हें शीघ्र ठीक करे और इन मरहूमीन के स्तर ऊंचा करचा चला जाए।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

वह समय बहुत अच्छा था। लेकिन अब हालात बदल गए हैं। डेनमार्क और यूरोप में कई मुसलमान हैं। मुझे उम्मीद है कि हम सभी आपसी सद्भाव और प्यार और मुहब्बत के साथ रहें। एक बार फिर मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने कार्यक्रम में आमंत्रित किया है। हुज़ूर अनवर और आप सभी का जो यहां आए हैं, धन्यवाद।

* इस के बाद The Alternative जमाअत से संबंध रखने वाली सदस्य संसद माननीय Josephine Fauk ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा:

हुज़ूर अनवर और अन्य दर्शकों को धन्यवाद करती हूँ। मैं डेनमार्क में हुज़ूर अनवर का स्वागत करता हूं। 11 साल बाद हुज़ूर अनवर हमारी राजधानी में आए हैं जो हमारे लिए एक महान सौभाग्य की बात है।

महोदया ने कहा: मैं समझती हूं कि विभिन्न धर्मों और राजनीतिक और समाज के विभिन्न समूहों के बीच चर्चा की आवश्यकता है। आजकल की स्थिति, जहां अंतर्जातीय धार्मिक, राजनीतिक समूह और देशों के आपसी मतभेद चरम पर हैं और विशेष कर हिजरत करके आने वालों को लेकर समस्याएं हैं, इन सबका मुकाबला करने के लिए बहुत ज़रूरी है कि धार्मिक रहनुमा समाज के अन्य संगठनों से बातचीत करें। मैं हुज़ूर अनवर से बहुत प्रभावित हूँ और आप की शांति और सद्भाव फैलाने, राज्य और धर्म को अलग रखने और स्वतंत्रता राय और संवाद के महत्त्व को उजागर करने के लिए किए गिए प्रयासों से अवगत हूँ।

यू.के की तरह, डेनमार्क में भी एक बड़ा मुस्लिम समुदाय भी है, जो समाज में हिस्सा ले रहा है। हमें राजनेता धार्मिक और जातीय समूहों के लिए एक समन्वय के रूप में काम करना चाहिए। मैं एक बार फिर हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा करती हूं कि आप यहां डेनमार्क आए थे और धन्यवाद कि आपने यहां आमंत्रित किया।

* इस बाद His Excellency Mr Bertel Haarder जो कि Minister for Cultural Affairs and the Minister of Eccleciastical Affairs हैं, उन्होंने अपने संबोधन में कहा:

मेरे लिए बतौर मिनिस्टर आफ़ संस्कृति और चर्च आज इस कार्यक्रम में भाग लेना और हुज़ूर अनवर के सामने अपने विचार व्यक्त करना एक महान सम्मान की बात है। मेरी जिम्मेदारियों में से एक यह है कि मैं डेनमार्क में विभिन्न धर्मों और मान्यताओं के लोगों में सद्भाव और शांति को मजबूत करने की कोशिश करूं। डेनमार्क में 160 विभिन्न धार्मिक समूह पंजीकृत हैं और सभी में धार्मिक स्वतंत्रता है। इनमें से कई संगठनों के अपने स्वयं के स्कूल, कब्रस्तान आदि हैं। लेकिन मैं यह व्यक्त करना चाहता हूं कि इन सभी में अहमदिया जमाअत में एक विशेष स्थान रखती है क्योंकि वे स्थानीय समुदाय में घुल मिल गए हैं। पिछले 50 वर्षों से, आप हमारे साथ डेनमार्क में शांतिपूर्वक रह रहे हैं।

मुझे ख़ुशी है कि हुज़ूर अनवर और आपके समुदाय का स्वागत करने के लिए आपका स्वागत है और आप सभी के लिए मुहब्बत पर विश्वास करते हैं। यह संदेश स्पष्ट रूप से यद्यपि छोटा मालूम हो परन्तु यह छोटा नहीं है। यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण संदेश है और यहां आने का उद्देश्य भी यही है। मेरे यहां आने वाले बहुत से लोग हुज़ूर को शांति और प्रेम की सेवाओं को बधाई देने के लिए उपस्थित हुए हैं।

जमाअत अहमदिया की स्थापना 1889 में हुई थी। इस जमाअत के संस्थापक मिर्ज़ा गुलाम अहमद अल्लाह तआला की तरफ से इल्हाम प्राप्त थे। आप न केवल आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उत्तराधिकारी थे, बल्कि मसीह मौऊद भी थे, जिनका मोमिनीन इंतज़ार कर रहे थे। जमाअत अहमिदया के मुताबिक, जिहाद लड़ने का नाम नहीं है बल्कि असली जिहाद तो प्यार से किया जाता है। आज, डेनमार्क में 160 अलग सोच से सम्बन्ध रखने वाले गिरोह मौजूद हैं और मैं इस बात को व्यक्त करने में गर्व करता हूँ कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत उन सभी में शांति और प्यार को बढ़ावा देने और घृणा के ख़िलाफ काम करने में सबसे आगे है और इसके लिए जमाअत अहमदिया को धन्यवाद करता हूं इस कठिन समय दुनिया में जब आतंकवादी हमले हो रहे हैं। हम यही चाहते हैं और विशेष रूप से इस वजह से इस्लाम के नाम पर आक्रामक हमले किए जा रहे हैं। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि इस्लाम की शिक्षा यहां काफी अलग है। इसके लिए आप सभी को धन्यवाद।

9 मई 2016 (दिनांक सोमवार)

संबोधन हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़

तऊज़ और तसमिया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अज़ीज़ ने फरमाया : सभी सम्मान्नीय मेहमान!

अस्सलामो अलैकुम वा रहमतुल्लाह व बरकातहू।

आप सभी पर अल्लाह तआला के आशीर्वाद और रहमतें हों। सबसे पहले, मैं इस अवसर पर सभी मेहमानों का धन्यवाद करूंगा, जो आज हमारे निमंत्रण को स्वीकार कर के पधारे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जमाअत अहमदिया मुस्लिमा इस्लाम का एक समुदाय है जिस का उद्देश्य तथा लक्ष्य बड़ा स्पष्ट है। हम मानवता को ख़ुदा तआला के क़रीब खींचने की कोशिश करते हैं। हम लोगों के बन्दों के अधिकार, एक दूसरे के साथ प्यार, मुहब्बत और सम्मान के साथ पेश आने की ज़रूरत की तरफ आकर्षित करते हैं। और हम दुनिया में वास्तविक और स्थायी अमन की स्थापना की इच्छा रखते हैं और इसके लिए कोशिश करते हैं। हम अहमदी मुसलमान मानते हैं कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के संस्थापक वही मसीह मौऊद और इमाम महदी हैं जिनके बारे में कुरआन और इस्लाम के पैगम्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फरमाई थी। कुरआन और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ इन निशानों के विषय में भी भविष्यवाणी फ़रमाई जिनसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता के सबूत मिलना था। और हम मानते हैं कि सभी निशानियां हमारे समुदाय का दावा करने के पक्ष में हैं। कुछ निशानों का सम्बन्ध दुनिया में मसीह मौऊद और महदी मौऊद से से संबंधित हैं। उदाहरण के रूप में यह भविष्यवाणी की गई कि मसीह मौऊद उस समय भेजा जाएगा जब दुनिया में आधुनिक संचार साधन इस सीमा तक फैल चुके होंगे कि दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के लोग एक स्थान पर जमा हो जाऐंगे और जब प्रेस और मीडिया की स्थापना हो चुकी होगी। फिर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक भव्य आसमानी निशान की भविष्यवाणी फ़रमाई जो मसीह मौऊद के समय प्रकट होना था और यह निशान चाँद ग्रहण था कि रमज़ान के नियत दिनों में लगना था। संस्थापक जमाअत अहमदिया के दावे के मद्देनजर यह आसमानी निशान बड़ी महानता और शौकत के साथ 1894 ई में धरती के पूर्वी भाग और 1895 ई में पश्चिमी भाग पर अक्षर अक्षर पूरा हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अत: कुरआन और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन पेशगोइयों को दिन की उज्ज्वलता की तरह पूरे होता देखकर हम अहमदी मुसलमान मानते हैं कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी एकमात्र मसीह और इमाम महदी है। हमारा मानना है कि आप अलैहिस्सलाम शान्ति के तारे थे ताकि इस्लाम की अद्भुत और अश्चर्य चकित करने वाली शिक्षाओं को फैला सकें। आपने दुनिया के सभी लोगों को इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया कि वह शान्ति तथा प्रेम के साथ एक दूसरे के साथ मिल जुल कर रहें। और आप ने अपनी जमाअत को दया तथा सहानुभूति की शिक्षा पर ज़ोर दिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं कि

" मानव जाति पर करूणा और सहानुभूति करना बहुत बड़ी इबादत है और अल्लाह तआला की ख़ुशी प्राप्त करने के लिए यह एक जबरदस्त माध्यम है।"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इसलिए हमारी धारणा के अनुसार, इस्लाम सिखाता है कि अल्लाह तआला के अधिकारों को ,बन्दों के अधिकारों को अदा किए बिना अदा नहीं किया जा सकता। बल्कि विशेष परिस्थितियों में, अल्लाह तआला के अधिकारों पर बन्दों के अधिकारों को प्राथमिकता मिलती है। सारांक्ष यह कि इस्लाम की यह शर्त है कि मनुष्य केवल तब ही मुसलमान कहला सकता है जब दूसरों के अधिकारों को अदा करे यह देखे बिना कि वे कौन हैं और उनके विश्वास क्या हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: 1908 ई में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मृत्यु के बाद आप अलैहिस्सलाम के उत्तराधिकार में ख़िलाफत प्रणाली स्थापित हुई जिसका उद्देश्य था और हमेशा रहेगा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मिशन और इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को दुनिया के किनारों तक फैलाएं। अब मैं आपके सामने कुछ वास्तविक इस्लामी शिक्षाएं रखूंगा और मैं धर्म के बारे में साधारण ग़लत धारणाओं को दूर करने की कोशिश करूंगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया इस्लाम मनुष्यों को हर प्रकार वैर और द्वेष से बचते हुए प्यार और आपसी प्रेम के झंडे तले एकजुट होने की शिक्षा देता है। इस्लाम समाज के हर स्तर पर लोगों के बीच न्याय इन्साफ़ और शांति की स्थापना को बढ़ावा देता हे। अत: कुरआन की सूर: माइद:

आयत 9 में अल्लाह तआला फरमाता है कि

" हे ईमानदार! तुम न्याय के साथ गवाही देते हुए अल्लाह तआला के लिए तय्यार हो जाए हो और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें हरगिज़ इस बात पर तय्यार न करे के तुम न्याय न करो। तुम न्याय करो, यह तक्वा के अधिक निकट है और। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह तआला इसको बहुत अधिक जानने वाला है। "

इस आयत में अल्लाह तआला मुसलमानों के साथ- साथ विरोधियों और दुश्मनों के साथ भी न्याय, इन्साफ़ के साथ पेश आने का आदेश दे रहा है। अत: इस्लाम किसी अवस्था में अन्याय या ज़ुल्म की अनुमति नहीं देता है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुनिया में धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता के उच्चतम मानकों की स्थापना की।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने देश में कई साल के अत्याचार सहन किए और फिर मदीना हिजरत की इसके बाद जिस प्रकार यहूदियों और अन्य ग़ैर-मुसलमानों के बाद सम्मान का व्यवहार किया वह भी इस का एक उदाहरण है। मदीना के अधिकांश स्थानीय लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और न केवल आपको धार्मिक नेता बनाया बल्कि राज्य के नेता के रूप में भी चुना। हालांकि, मदीना में बड़ी संख्या में यहूदी और ग़ैर-मुसलमान मौजूद थे। इसलिए आप ने राज्य के राहनुमा के रूप में स्वतंत्रता और सहिष्णुता के सार्वभौमिक सिद्धांतों के आधार पर यहूदियों और अन्य समूहों के साथ एक समझौता किया जिसके अनुसार रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूदियों और ग़ैर मुसलमानों को उनकी धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा की गारंटी दी। इतिहास से यह साबित होता है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस समझौते की शर्तों का कभी उल्लंघन नहीं किया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अध्यक्षता में धार्मिक अधिकार और ग़ैर मुसलमानों की स्वतंत्रता हमेशा बनाए रखी गई। इस से उन आरोपों की बड़ी स्पष्टता से खण्डन होता है जो कहते हैं कि इस्लाम धर्म के नाम पर अन्तर करता है या यहूदियों के साथ भेदभाव की अनुमति देता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : नबी करीम के उच्च नैतिकता का उदाहरण एक और अवसर भी नज़र आती है जब नजरान शहर से एक ईसाई प्रतिनिधिमंडल आप से मिलने आया। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पता चला कि यह इबादत करना चाहते हैं तो आप ने उन्हें इबादत के लिए अपनी मस्जिद प्रदान कर दी कि इस में अपने रिवाज और मान्यताओं के अनुसार इबादत कर सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : एक आरोप यह भी लगाया जाता है कि इस्लाम जबरदस्ती तलवार के ज़ोर पर फैला है। वस्तुत: पूरी तरह से ग़लत है और सत्य से बहुत दूर है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके बाद चारों ख़लीफा के समय में जो भी युद्ध हुए वह केवल रक्षात्मक थे जबकि युद्ध उन पर थोप दिया गया था और जब युद्ध मुसलमानों पर लागू किया गया तो मुसलमानों ने अन्य धर्मों के पवित्र स्थानों और सम्मान जनक हस्तियों की रक्षा की। लेकिन उसके बावजूद बड़े खेद से कहना पड़ता है कि आज दुनिया में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चरित्र का हनन किया जा रहा है, यहां तक कि यहां डेनमार्क में भी कुछ साल पहले कार्टून प्रकाशित किए गए जिन के द्वारा इस्लाम के संस्थापक रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उपहास किया गया और नऊज़ बिल्लाह एक कब्ज़ा करने वाला और योद्धा के रूप में प्रस्तुत किया गया। जब कि तथ्य यह है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तो सदैव से यही इरादा था कि शांति और मानवाधिकार स्थापित किए जाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जब अल्लाह तआला ने पहली बार मक्का वालों के ख़िलाफ रक्षात्मक युद्ध की अनुमति दी तो यह केवल इस्लाम की रक्षा के लिए नहीं बल्कि धर्म की रक्षा के लिए दी गई। इसीलिए सूर: अलहज्ज आयत 40 और 41 में अल्लाह तआला फरमाता है अगर अन्याय रोका न गया तो यह केवल निर्दोष मुसलमानों पर हमला करने तक सीमित नहीं रहते बल्कि वह अंतत: उन्होंने सभी प्रकार के धर्म को तबाह कर दिया। अल्लाह तआला ने इन आयतों में बड़ा स्पष्ट रूप से कहा है कि अगर मक्का वालों को बल द्वारा नहीं रोका जाता तो न कोई चर्च, न गिरजा, न मंदिर, न मस्जिद और न ही और इबादत की जगह बाकी रहता। कुरआन की ये आयतें बड़ी स्पष्टता के साथ वर्णन करती हैं कि जब मुसलमानों को रक्षात्मक युद्ध की अनुमति दी गई तो यह अनुमति देशों पर काबिज़ होने और अत्याचार फैलाने के लिए नहीं बल्कि सभी धर्मों और विश्वासों की रक्षा के लिए दी गई। अत: इसके मद्देनजर एक सच्चे मुसलमान के लिए इस्लाम के विरोधियों के यह दावे गंभीर दु:ख पैदा करने का कारण हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नाऊज़ बिल्लाह शक्ति के प्यासे और अपनी सरकार स्थापित करने के लिए उत्सुक थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हरगिज़ शक्ति नहीं चाही और न कभी ऐसा युद्ध जिसका उद्देश्य इस्लाम को जबरन फैलना और दूसरों को जबरन मुसलमान बनाना हो किया। इसलिए यह एक सच्चे मुस्लिम का कर्तव्य है, चाहे वह सारे धर्मों को चाहे ईसाइयत हो या यहूदियत या कोई भी धर्म है उन की सुरक्षा करे और सम्मान करे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया :

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो यह शिक्षा दी है केवल उनका लोगों के साथ लड़ा जाए जो सीधे ही युद्ध में शरीक हों। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया , युद्ध के दौरान किसी भी निर्दोष व्यक्ति पर हमला न किया जाए। महिलाओं, बच्चों और बूढ़े पुरुषों को लक्षित नहीं किया जाना चाहिए। किसी धार्मिक नेता या पुजारी या धार्मिक उपासकों पर हमला नहीं किया जाता है। इस के अतिरिक्त रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शिक्षा दी कि किसी को इस्लाम स्वीकार करने के लिए कभी मजबूर न किया जाए यही कुरआन की शिक्षा है। बड़े खेद की बात है कि इन उच्च शिक्षाओं के बावजूद इस दौर में जो युद्ध लड़े जाते हैं उनमें हम लगातार ऐसी घटनाएं देख रहे हैं जहां अंधा धुंध फ़ाइरनग या बम्बारी दी जाती है जिनमें निर्दोष और निहत्थे नागरिक, महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों को बड़ी बे दर्दी से मार दिया जात है। ऐसे मुस्लिमों के इस तरह के क्रूर व्यवहार केवल अपने धर्म को बदनाम करते हैं और उन्हें सब से बुरे शब्दों में निंदा की जानी चाहिए। लेकिन इस्लाम में यह अज्ञान और अंधेरे का युग आना ही था, क्योंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन स्थितियों की भविष्यवाणी फरमाई हुई थी कि मुसलमान सम्पूर्ण रूप से अपने धर्म की शिक्षाओं को भला देंगे। यह ऐसा समय होना था जब अल्लाह तआला ने मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजना था जिन्होंने इस्लाम को पुन: पुनर्जीवित करना था और एक पवित्र जमाअत का गठन करना था जिसने इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का पालन करना था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: फिर यह भी नहीं कहा जा सकता कि ग़ैर मुस्लिम दुनिया भी मासूम है और उसके सिर पर कोई आरोप नहीं है। बेशक कुछ ग़ैर-मुस्लिम शक्तियां हैं जो अपने दावे के बावजूद कि वे दुनिया में शांति स्थापित करने के इच्छुक हैं। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अन्यायपूर्ण युद्धों के माध्यम से, निर्दोष लोगों को मारने और उन पर अत्याचार करने के जिम्मेदार हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: बहरहाल यह सच है कि आज मुसलमान सरकारें ईमानदारी, धर्म और न्याय इन्साफ़ जैसे वास्तविक इस्लामी नियमों का पालन नहीं कर रहीं। जहां और जब भी इस्लाम की सच्ची शिक्षाएं लागू की जाती हैं, प्रत्येक इन सिद्धांतों की सुन्दरता और लाभ को सराहता है। जैसे उमर रज़ि अल्लाह के ज़माने में जो कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दूसरे ख़लीफा थे, के युग में इस्लाम सीरिया तक फैल गया और वहाँ इस्लामी हुकूमत कायम हुई। इस सरकार में ईसाई नागरिकों पर उनकी रक्षा के लिए एक कर लगाया गया था। लेकिन बाद में, जब रोमन साम्राज्य ने शासन किया, तो मुस्लिम सरकार ने इस कर को वापस कर दिया क्योंकि सत्तारूढ़ शासक उन्हें सुरक्षित नहीं रख पाए और उनके अधिकारों को अदा नहीं कर सके। मुस्लिम शासकों को देश छोड़ने और मुसलमानों को मुस्लिमों के अधीन रहने वाले ग़ैर-मुसलमानों को देखने के लिए छोड़कर कोई रास्ता नहीं छोड़ा गया था। उन्होंने मुसलमानों को वापस आने के बड़े भावनात्मक तरीके से अपील की और इसके लिए दुआ की। उन्होंने बिना किसी शंका के इस बात को व्यक्त किया कि मुसलमानों को उन पर फिर से शासन करना चाहिए और उन्हें रोमन सरकार के नुकसान से बचाया जाना चाहिए। उसके बाद, जब मुस्लिम दोबारा वहां शासक बन गए, तो वे ग़ैर-मुस्लिम जश्न मनाने वालों में सब से पहले व्यक्ति थे, जो जानते थे कि उनके अधिकार फिर से स्थापित किए जाएंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : वास्तव में प्रारंभिक मुसलमान अपने सभी मामलों में निष्पक्ष और पारदर्शी थे। उदाहरण के लिए एक बार हज़रत उमर रज़ि अल्लाह के पास जो इस्लाम के दूसरे ख़लीफा थे एक मामला पेश हुआ जिस में एक पक्ष मुसलमान दूसरा पक्ष यहूदी था: उन दोनों की बातें सुनने के बात, हजरत उमर रज़ि अल्लाह ने इस यहूदी के पक्ष में फैसले दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : "इस्लाम यह भी सिखाता है कि दूसरों की भावनाओं और इहसासों का ख्याल रखना महत्त्वपूर्ण है। एक बार हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि अल्लाह ने एक यहूदी के साथ चर्चा करते हुए यह कह दिया कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्थान हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से ऊपर है। यह सुनकर, यहूदी आदमी ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से शिकायत की। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर अबू बकर रज़ि अल्लाह तआला को जो के आप के करीबी दोस्त और मुख़लिस थे समझाया। आप ने इसी प्रकार फरमाया कि इस यहूदी का भावनाओं का ध्यान रखना चाहिए था यद्यपि जो हज़रत अबू बकर ने फरमाया वह इस्लामी शिक्षा के अनुसार था परन्तु फिर भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया की किसी मुसलमान को यहूदी के सामने इस प्रकार की बात नहीं करनी चाहिए। जिस से उस की भावनांए आहत होती हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह शिक्षा बहुत गहरी और विभिन्न धर्मों से संबंध रखने वालों के बीच शांति का आधार है। आज हम देखते हैं कि धार्मिक स्वतंत्रा तथा राय की आज़ादी के नाम पर नबियों का अपमान किया जाता है। हालांकि लाखों लोग उन के अनुयायी हैं और हरगिज़ सहन नहीं कर सकते कि उन का इस प्रकार अपमान किया जाए। अगर हम वास्तव में दुनिया में शांति स्थापित करना चाहते हैं, तो हमें अपने शब्दों और कार्यों के परिणामों के बारे में सोचना होगा। हमें दूसरों की भावनाओं और मूल्यों का ख्याल रखना है। इससे परस्पर निकटता बढ़ेगी और दुनिया के अधिकांश हिस्सों में जो नफरतें हैं तथा नाराज़गियां है इन्हें गिराने में मदद मिलेगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : वास्तव में शान्ति की स्थापना आज की सब से प्रमुख आवश्यकता है कोई भी इस से इन्कार नहीं कर सकता। अमन की स्थापना ही हमारी प्रथम इच्छा और उद्देश्य होना चाहिए। इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि कुछ मुसलमानों के नफरते भरे कामों का वर्तमान झगड़ों में बहुत अधिक दखल रहा है परन्तु यह बात बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिए कि उनके क्रूर कृत्य इस्लामी शिक्षाओं से दूरी का परिणाम हैं। इसके अलावा, ऐसी कई ग़ैर-मुस्लिम शक्तियां हैं जो इन ग़लत मतभेदों और नीतियों के कारण इन मतभेदों की आग को और अधिक भड़का रही हैं। बहरहाल अगर कोई कुरआन और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवनी का पूर्वाग्रह मुक्त होकर न्याय की दृष्टि से अध्ययन करे तो वह जल्द ही जान जाएगा कि इस्लाम शांति का धर्म है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सक्षात शांति के इच्छुक थे। वे जान जाऐंगे कि कुरआन की शिक्षाएं वास्तव में सारी मानवता से मुहब्बत सिखाती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : आज हम एक ऐसे युग में हैं जो दिन प्रतिदिन अशांति और अनिश्चितता की ओर बढ़ रहा है अत: दुनिया के हर हिस्से में रहने वाले हर व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि शांति के लिए व्यक्तिगत स्तर पर जिम्मेदारी उठाए। दनिया भर में मतभेद बदस्तूर बढ़ रहे हैं और हमें हरगिज़ यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि एक निश्चित युद्ध की छाया हमारे सामने मंडरा रही है। हम अपने सामने गठजोड़ और ब्लॉक देख रहे हैं, और मुझे डर है कि हम पागल की तरह बिना सोचे समझे तीसरे विश्व युद्ध की ओर दौड़ने जा रहे हैं। वास्तव में, यह कहना गलत नहीं होगा कि इस तरह के युद्ध की बुनियाद रखी जा चुकी है। अगर हम अपने आप को बचाना चाहते हैं और इससे भी महत्त्वपूर्ण है कि हम अगर अपने बच्चों और आने वाली पीढ़ियों को युद्ध की पीड़ा और इस विनाशकारी परिणाम से बचाना चाहते हैं तो हमें निश्चित रूप से अपने निर्माता और एक दूसरे के अधिकार अदा करने होंगे। हमें एक-दूसरे का सम्मान करना और विचार करना है, और हमें दूसरों की धार्मिक और राष्ट्रीय भावनाओं को महत्त्व देना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इसमें कोई शक नहीं है कि मुसलमान सरकारें अपनी प्रजा के लिए असफल साबित हो चुकी हैं और इन सरकारों ने अवैध रूप से अपनी प्रजा के अधिकार दबाए हुए हैं और इसी बात का उग्रवादी और आतंकवादी गिरोह लाभ उठा रहे हैं और ताकत पकड़ गई हैं। ये समूह अब न केवल मुस्लिम दुनिया में विनाश और तबाही फैला रहे हैं, बल्कि वे उन्होंने अपने जाल को पश्चिम तक फैला दिया है। इसलिए इस्लाम और मुसलमानों का डर बढ़ गया है और यह दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। मैं एक बार फिर से स्पष्ट करना चाहता हूं कि इन तथा कथित मुस्लिमों के क्रूर कृत्यों हर जगह इस्लामी शिक्षाओं को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं, लेकिन उनके अपने स्वयं के गुप्त उद्देश्य हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : जो कुछ मैंने कहा है उसके संदर्भ में पश्चिमी शासकों और राजनेताओं से अनुरोध करता हूं कि वे अपनी ज़िम्मेदारियों को समझें और अपने राजनीतिक और आर्थिक उद्देश्य की ख़ातिर मुस्लिम नेताओं से अच्छे संबंध बनाने की बजाए, प्रभाव प्रयोग करते हुए और तटस्थ बनकर मुस्लिम सरकारों की सहायता करें और उन्हें शांति के लिए मार्गदर्शन करें। अन्यथा ये राजनेता और शासक भी दुनिया की शांति को बर्बाद करने में शरीक होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : इन दिनों यूरोप के रहने वालों में भय और चिंता बढ़ रही है कि पिछले साल के दौरान यूरोप में कई प्रवासियों के प्रवेश हो गए हैं। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि शरणार्थियों के एक बड़े बहुमत ने यूरोप में आश्रय लिया है कि उनके अपने देशों में भयानक दुर्व्यवहार हो रहे हैं। लेकिन, वास्तव में अपने देशों के अत्याचारों से भागे हुए इन लाखों लोगों के समूने की किसी भी देश बल्कि महाद्वीप में भी शक्ति नहीं है। अत: इसका एकमात्र समाधान यह है कि इन के मूल देशों में शांति की एक स्थिर प्रणाली स्थापित करने का स्थायी प्रयास होना चाहिए। और इन देशों में अत्याचारों की समाप्ति की जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : मैं एक बार फिर सारे मेहमानों और विशेष रूप से यहां आने लाने वाले राजनेताओं और देश की हस्तियों से आग्रह करता हूं कि आप विश्व शांति की स्थापना के लिए कोई मौका हाथ से जाने न दें। अन्यथा विनाश का अनुमान नहीं लगाया जा सकता है। जैसा कि मैंने पहले कहा था, तीसरा विश्व युद्ध बहुत तेज़ी से आ रहा है और यदि इस को रोका न गया तो तबाह करने वाले परिणाम नस्लों तक जाएंगे। क्योंकि यह संभव है कि इस युद्ध में परमाणु हथियारों का उपयोग किया जाए। ऐसे युद्ध के प्रभाव सोच से परे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया : अल्लाह तआला सभी लोगों को बुद्धि और ज्ञान प्रदान करे और अपने फजल और दया से हम सब की रक्षा करे और मानव जाति को परस्पर शांति और सद्भाव से रहने और एक दूसरे के अधिकार अदा करने की शक्ति प्रदान करे। अल्लाह तआला करे कि हम शीघ्र ही वर्तमान कठोर ज़माना से बाहर निकल कर एक बेहतर और उज्ज्वल भविष्य में प्रवेश करें जहां सभी राष्ट्र और समूह एक साथ मिल कर रहें और जहां प्यार और मुहब्बत और मानवता का बोल बाला हो। मैं आप सब का शुक्रिया अदा करता हूं। बहुत बहुत शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 7 बज कर 25 मिनट तक जारी रहा और ख़िताब के अंत में पूरा हॉल ज़ोरदार तालियों से काफी देर तक गूँजता रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मेहमान सज्जनों को उपहार प्रदान किए और उसके बाद दुआ करवाई ।

कार्यक्रम के अनुसार, इस समारोह के अंत में, सभी मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ भोजन खाया।

हुज़ूर अनवर के साथ केंद्रीय टेबल पर संसद के सदस्य और अन्य सदस्य थे। हुज़बर अनवर इन के साथ विभिन्न मामलों पर बातें करते रहे। उस समय, कुछ मेहमान हुज़ूर अनवर से मिलने आए, और हुज़ूर अनवर से मुलाकात की। कुछ मेहमान अपने स्थान पर खड़े हो कर हुज़ूर अनवर की तस्वीर बनाते रहे। समारोह के अन्त में भी मेहमानों का एक तांता बंध गया और सभी ने हुज़ूर अनवर से मुलाकात की। इस के साथ तस्वीर भी बनाई।

आज के इस आयोजन में सौ से अधिक डेनिश मेहमान शामिल हो गए। इस समारोह में सांसदों, नेताओं, मेयरों, पार्षदों, राजनेताओं, प्रोफेसरों, डाक्टरों और विभिन्न विभागों से जुड़ी महत्त्वपूर्ण हस्तियों के अलावा डेनमार्क में निर्धारित बेलजियम के अम्बेसडर, अमेरिकन एंबेसी के प्रतिनिधि, रूसी एंबेसी की प्रथम सैक्रेटरी और Fiona Kit Claudi Fron Iversen क्षेत्र के पुलिस निदेशक भी शामिल हो गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 16 August 2018 Issue No. 33

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाह तआला की विशेषताऐं

30 हिजरी की घटना है कि हज़रत हज़ीफा बिन अलयमान रज़ि अल्लाह अन्हो जब बसरा, कूफा ,शाम आदि से होते हुए मदीना मुनवरा में वापिस तशरीफ लाए तो उन्होंने कहा के यह अजीब बात है के इराक वाले कुरआन मजीद को एक ओर किरत से पढ़ते हैं और शाम वाले किसी दूसरी किरत को पसन्द करते हैं। बसरा वालों की किरत कूफा वालों से और कूफा वालों की किरत फारिस के लोगों से अलग है। मुनासिब यह मालूम होता है कि सबको एक ही किरत पर जमा किया जाए।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो ने सहाबा किराम को जमा करके मजलिस मुशावरत मुनअकिद की सब ने हुज़ीफा बिन अलयमान रज़ि अल्लाह अन्हो की राय को पसन्द किया इसके बाद हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो ने हज़रत हफसा रज़ि अल्लाह अन्हो के पास से कुरआन मजीद का वह नुस्ख़ा मंगवाया जो ख़िलाफत सिद्दिकी रज़ि अल्लाह अन्हो में हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाह अन्हो और दूसरे सहाबा के द्वारा जमा और संकलित हुआ था और पहले हज़रत अबु बकर रज़ि अल्लाह अन्हो के पास फिर इनके बाद फारूक आज़म रज़ि अल्लाह अन्हो इस से तिलावत करते थे। और फारूक आज़म रज़ि अल्लाह अन्हो की शहादत के बाद हज़रत हफसा रज़ि अल्लाह अन्हो के पास था। इस कुरआन मजीद की नकल और किताबत पर हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो ने की मअकूल और उपयुक्त लोगों को मामूर किया जब बहुत सी नकलें तैयार हो गईं तो एक-एक नुस्ख़ा बड़े बड़े शहरों में भेज कर साथ ही हुक्म भेजा के सब इसी के अनुसार कुरआन मजीद नक्ल कराएँ और पहली जो नक्ल उनके पास हो जला दी जाएँ।

हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो का यह कारनामा इतना अज़ीम है कि बाकी सारे कारनामे इसके सामने छोटे हैं। आपके इस कारनामा के कारण कयामत तक के लिए कुरआन मजीद उम्मत में एक हो गया इसी प्रकार इस में से किसी किस्म की किताबत व किरत की ग़लती की समभावना ख़त्म हो गई। आज बेशक उम्मत मुसलिमा अन्य मसलों में इख़तिलाफ करती है और कुफर व तकफीर तक की नौबत पहुँच जाती है मगर कुरआन मजीद के ज़ेर तथा ज़बर के एक जैसे होने में सारी उम्मत का इज्माअ है और आज सारे फिर्के एक कुरआन मजीद की ही तिलावत करते हैं। हज़रत उस्मान ग़नी ख़लीफा सालिस रज़ि अल्लाह अन्हो के द्वारा यह ख़िलाफत का एक ऐसा अज़ीम कारनामा है के दुनिया की कोई कौम इसका मुकाबला नहीं कर सकती।

हज़रत उस्मान रज़ि अल्लाह अन्हो की और भी बहुत सी विशेषताएं हैं जिनमें कुछ नीचे वर्णन की जा रही हैं :

"हज़रत इब्न असाकर रज़ि अल्लाह अन्हो फरमाते हैं कि हज़रत अमीरूल मोमेनीन उस्मान ग़नी रज़ि अल्लाह अन्हो ने इरशाद फरमाया के मेरी ये दस अमानतें ख़ुदा तआला के पास हैं

1- आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत के बाद चौथा मुसलमान हूँ।

2- आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेटी का निकाह मुझ से हुआ।

3- जब इनका इंतकाल हो गया तो दूसरी बेटी मेरे निकाह में आई।

4- मैंने कभी राग का शोक नहीं किया।

5- बदी की तमन्ना कभी मेरे दिल में पैदा नहीं हुई।

6- जिस दिन मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बैअत की है अपना दाहिना हाथ शर्मगाह को नहीं लगाया।

7- हर जुम्मा को मैंनें एक ग़ूलाम अज़ाद किया है अगर संयोग से भूल हुई तो कज़ा अदा की।

8- कभी में व्यभिचार का करने वाला नहीं हुआ। ना जाहलियत में ना इस्लाम में।

9- ज़माना जाहलियत या इस्लाम में कभी चोरी नहीं की।

10- कुरआन मजीद को हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना के अनुसार जमा किया।

(उद्धरित सीरत उस्मान प्रकाशक ताज कम्पनी लिमीटड लाहौर सफा 24 -25)

शेष पृष्ठ 12 पर

ओर अग्रसर होते हैं परन्तु ख़ुदा की इच्छा और नीति के बिना यह उतार-चढ़ाव स्वयं नहीं होते। ख़ुदा ने चाहा कि धरती पर ऐसा हो अत: हो गया। सद्मार्ग पर चलने और सद्मार्ग से भटकने की प्रक्रिया भी रात-दिन की प्रक्रिया की भांति ख़ुदा के विधान और आज्ञानुकूल चल रही है न कि स्वयं ही। बावजूद इसके कि प्रत्येक वस्तु उसकी आवाज़ सुनती है और उसकी पवित्रता का स्मरण करती है, परन्तु इन्जील कहती है कि धरती ख़ुदा की पवित्रता और श्रेष्ठता से खाली है। इसका कारण इस इन्जीली दुआ के अगले वाक्य में संकेत बतौर दिया गया है वह यह कि अभी उस में ख़ुदा का राज्य नहीं आया । इसलिए राज्य न होने के कारण, न कि किसी अन्य कारण से ख़ुदा की इच्छा धरती पर इस प्रकार कार्यान्वित नहीं हो सकी जैसे कि आकाश पर है । परन्तु क़ुर्आन की शिक्षा इसके बिल्कुल विपरीत है। वह स्पष्ट शब्दों में कहता है कि कोई चोर, ख़ूनी, बलात्कारी, नास्तिक, व्यभिचारी, उद्दण्ड और अपराधी धरती पर किसी भी प्रकार की बुराई नहीं कर सकता जब तक कि आकाश से उसको अधिकार न दिया जाए। अत: क्योंकर कहा जाए कि आकाशीय राज्य धरती पर नहीं। क्या कोई विरोधी धरती के आधिपत्य पर परमेश्वर के आदेशों के जारी होने में रुकावट डाल सकता है। पवित्र है ख़ुदा, ऐसा कदापि संभव नहीं बल्कि ख़ुदा ने स्वयं आकाश पर फ़रिश्तों के लिए पृथक नियम बनाया और धरती पर मनुष्यों के लिए पृथक। ख़ुदा ने अपने आकाशीय राज्य में फ़रिश्तों को कोई अधिकार नहीं दिया बल्कि उनके स्वभाव में ही आज्ञा पालन का तत्व रख दिया कि वे विरोध कर ही नहीं सकते और भूल-चूक उनसे हो नहीं सकती, पर मानवीय स्वभाव को स्वीकार और अस्वीकार करने का अधिकार दिया गया है। चूंकि यह अधिकार ऊपर से प्रदान किया गया है इसलिए यह नहीं कह सकते कि व्यभिचारी मनुष्य के अस्तित्व से ख़ुदा का राज्य धरती से जाता रहा, अपितु प्रत्येक रंग में ख़ुदा का ही राज्य है। हां केवल विधान दो हैं। एक अकाशीय, फ़रिश्तों के लिए नियति का विधान है कि बुराई कर ही नहीं सकते और एक धरती पर मनुष्यों के लिए नियति से संबंधित है। वह यह कि आकाश से उनको बुराई करने का अधिकार दिया है परन्तु जब ख़ुदा से शक्ति की याचना करें अर्थात अपने अपराधों और पापों पर क्षमायाचक हों तो रूहुलक़ुदुस की सहायता से उनकी कमज़ोरी दूर हो सकती है और वे पाप करने से बच सकते हैं जिस प्रकार ख़ुदा के नबी और रसूल बचते हैं। यदि ऐसे लोग हैं जो पाप कर चुके हैं तो पापों पर क्षमायाचना उनको यह लाभ पहुंचाती है कि पापों के परिणामों से अर्थात ख़ुदा के प्रकोप से सुरक्षित रखे जाते हैं क्योंकि प्रकाश के आने से अंधकार बाकी नहीं रह सकता

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 31 से 34)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad